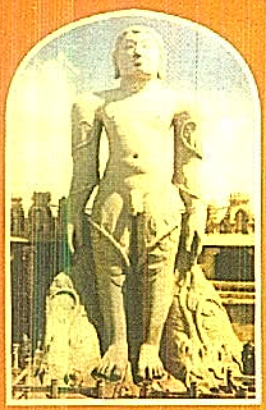

जैन तीर्थवंदना

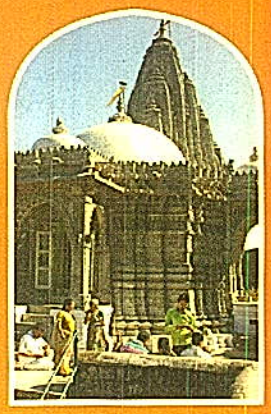

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2542

VOLUME : 6 ISSUE : 8 MUMBAI, FEBRUARY 2016 PAGES : 36 PRICE : ₹25

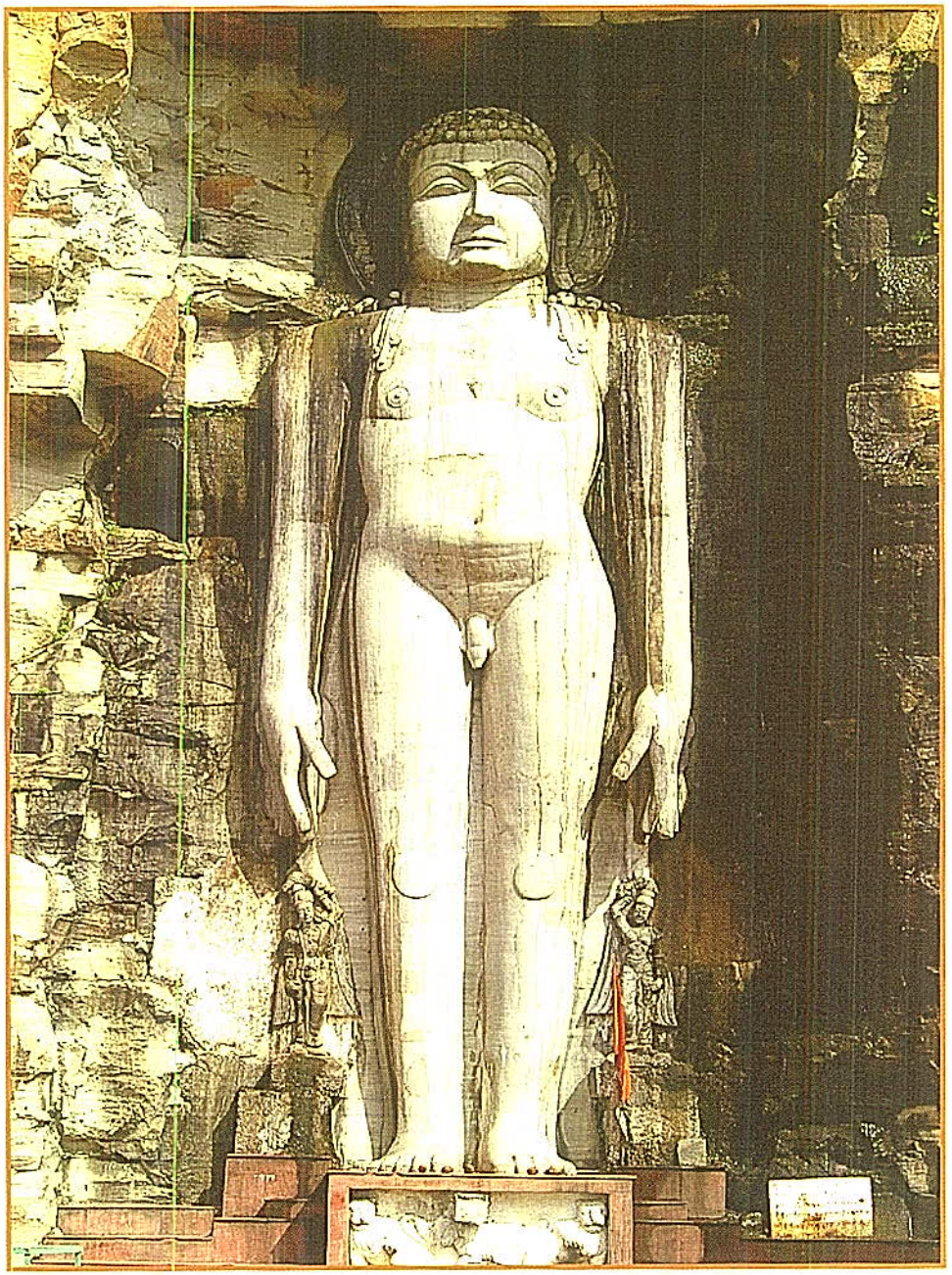

प्रथम तीर्थंकर श्री 1008 आदिनाथ भगवान, खंदारगिरि-मध्यप्रदेश

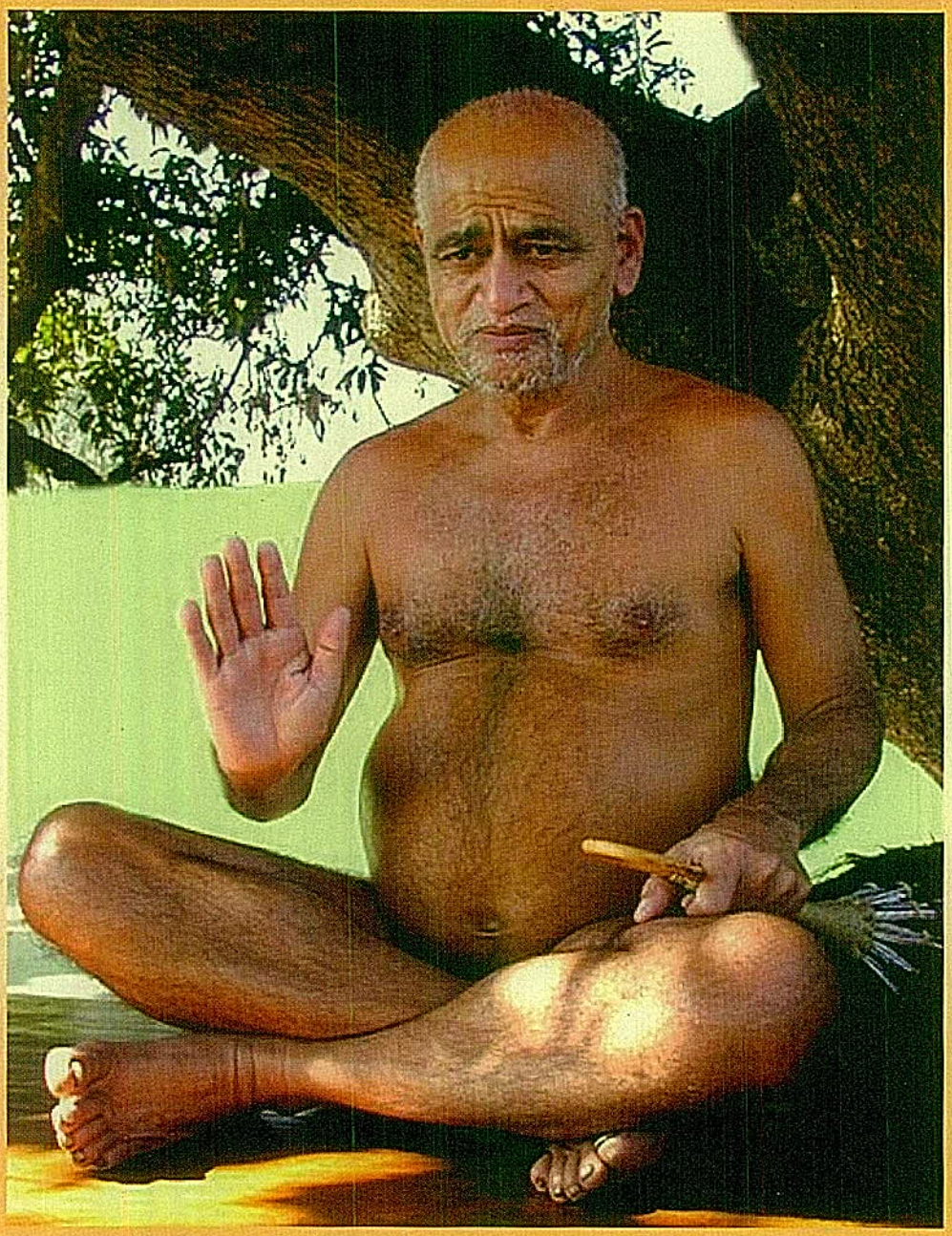

मंत्रों के मेरूदण्ड, द्वादशांग के व्याख्यान आप हैं।
मिटती मानवता के महायान अभियान आप हैं।।
माना कि काल दोष के कारण चौबीसी जन्म नहीं लेती।
लेकिन हम भक्तों को चौबीसी की पहचान आप हैं।।

R.K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 260101-10, 250501-5, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

अध्यक्ष की कलम से

साधर्मी बंधुओं,

जय जिनेन्द्र।

देवाधिदेव, आदि ब्रह्मा श्री १००८ वृषभनाथ भगवान के निर्वाण कल्याणक को विधि-विधान से हर्षोल्लास के साथ मनाने के समाचार पूरे देश के कोने-कोने से प्राप्त हुए। बहुत बहुत बधाई। दुनिया भर में 'जैन धर्म' का प्रवर्तन २४ वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी से प्रचारित किया गया जो जैन धर्मावलम्बियों के विरुद्ध इतिहासकारों की उथली सोच एवं अल्पज्ञता का परिणाम था जिसमें जैन धर्म की अति अनादि प्राचीनता को धुंधलाने की साजिश की गंध समाहित थी।

प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ (वृषभनाथ / ऋषभनाथ) के पुत्र भरत चक्रवर्ती के नाम से ही हमारे देश का नामकरण भारत पड़ा यह तथ्य सर्व विदित एवं स्वयं सिध्द हुआ। हम सभी गौरवान्वित हैं कि हम जैन भारत के सबसे प्राचीन अहिंसामयी धर्म के पालक इसीलिए दिगम्बरत्व, नगनत्व, अहिंसा, जीवदया एवं करुणा भारत वर्ष की संस्कृति के मूल ५ तत्व हैं। जब तक इन संस्कारों की पालना होती रही, भारत सोने की चिड़िया बनकर दुनिया में चहकता रहा, और जैसे-जैसे अहिंसा और जीवदया की महत्ता घटती गयी भारत गरीबी और अवसादों में घिरकर गुलामी की जंजीरों में जकड़ा गया।

अंग्रेजों ने हमारी मातृभाषा एवं प्रादेशिक प्रचलित लिपियों पर ऐसा सतत प्रहार किया कि भारत की आध्यात्मिक संपन्नता, लकवाग्रस्त हो गई एवं भारतीयों की प्रतिरोधक शक्ति क्षमता रसातल तक पहुंच गई। जिससे हम सदियों तक गुलामी में जकड़े रहे। और जाहिल, अनपढ़, गंवार के पर्यायवादी शब्द 'इंडियन/Indian' कहलाने के धीरे-धीरे अभयस्त बन गये। शिक्षा पद्धति ने पूर्ण रुप से अंग्रेजी माध्यम से पूरे देश को बौद्धिक रुप से विवश कर दिया कि हम शासकों के आज्ञाकारी सेवक नेता एवं अधिकारी, कर्मचारी कहलाने में अपने को श्रेष्ठ खुशनसीब समझने लगे।

सत्य को कहने के लिये
किसी शपथ पत्र की जरूरत नहीं,
नदियों को बहने के लिये,
किसी पथ की जरूरत नहीं होती।
जो बढ़ते हैं जमाने में अपने मजबूत इरादों पर,
उन्हें मंज़िल पाने के लिये किसी रथ की जरूरत
नहीं होती।

''जब जागे तभी सवेरा''

जागो भारतवासियों जागो, जागो भगवान आदिनाथ के पुत्र भरत के वंशजों जागो। जागो अहिंसा एवं जीवों पर दया करुणा के संस्कारों से सम्पन्न जैनों जागो।

गर्व से कहो :- कि ....

१. हम भारतवासी हैं, इंडियन नहीं

रिश्तों में जब झूठ बोलने की आवश्यकता महसूस हो तो समझ लो परेशानी आपका दरवाजा खटखटा रही है

२. हमारा देश भारत है इंडिया/India नहीं

३. जीव जंतुओं से लेकर पशु पक्षियों के प्राणों की रक्षा करना हमारा धर्म है उनकी हिंसा नहीं

४. कत्लखाने हमारे देश के माथे पर कलंक हैं, तिलक नहीं

५. हमारी सोच प्रगति/उन्नति/शिक्षा हमारी मातृभाषा से ही समृद्धिशाली हो विदेशी भाषा से नहीं

६. हम स्वयं भावों से, आचरण से अच्छे इन्सान बनें एवं दूसरों की इन्सानियत का आदर कर सकें यही हमारी संस्कृति है अन्य नहीं

७. हम सच्चे देव-शास्त्र-गुरु के उपासक सिर्फ ऊपरी शब्दों से नहीं, आंततिरक भावों से बनें

८. हमारे तीर्थक्षेत्र - शिखरजी, गिरनारजी, ... धार्मिक क्षेत्र घोषित हों... (मांस, मदिरा, मादक पदार्थों से मुक्त)

९. भगवान महावीर के संदेश को सार्थक कर सकें

'जियो और जीने दो'

तीर्थ हमारी आस्था के केन्द्र हैं, हमारी संस्कृति के प्राण हैं, हमारी श्रद्धा के सर्वोपरि सोपान हैं। तीर्थक्षेत्रों की रक्षा-सुरक्षा करना हमारा प्रमुख कर्त्तव्य है।

तो आईये हम संकल्प लें कि तीर्थों की रक्षा-सुरक्षा हेतु हमारा तन-मन-धन का अर्घ्य समर्पित हो।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी इसी उद्देश्य को लेकर कदम बढ़ा रही है। अभी बहुत कुछ करना बाकी है।

वक्त है कि पंख लगाकर गुज़रता जा रहा है....
ज़िदगी है कि अपनी रफ्तार से भागती जा रही है....
आहिस्ता चल ए ज़िदगी,
अभी कई फर्ज़ निभाना बाकी है
कुछ दर्द मिटाना बाकी है,
कुछ कर्ज चुकाना बाकी है।
कुछ रिश्ते बनकर टूट गये,
कुछ जुड़ते-जुड़ते छूट गये
उन टूटे-छूटे रिश्तों के
जख्मों को मिटाना बाकी है।।
कुछ हसरतें अभी अधूरी हैं,
कुछ काम और भी जरूरी हैं,
जीवन की उलझी पहेली को
पूरा सुलझाना बाकी है।
जब सांसों को थम जाना है,
फिर क्या खोना क्या पाना है,
पर मन के जिद्दी बच्चे को,
यह बात बताना बाकी है।।
आहिस्ता चल ए ज़िदगी.....
कुछ फर्ज़ निभाना बाकी है।

जय जय गुरुदेव

जय जिनेन्द्र

जय सम्मेदशिखरजी,

जय गिरनारजी

आपका ही

सुधीर जैन

सुधीर जैन

तीर्थ दो प्रकार के हैं - द्रव्य तीर्थ (सम्मेदशिखर, चम्पापुरी, पावापुरी आदि) और भावतीर्थ (सम्यग्ज्ञान, सम्यक तप, संयम आदि) (मूलाचार, गा. 560)

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 6 अंक 8 फरवरी 2016

परामर्श मण्डल

डॉ. नीलम जैन, पुणे
श्री संजय जैन 'मैक्स', इंदौर
श्री श्रीकिशोर जैन, दिल्ली

संपादक

उमानाथ आर. दुबे
डॉ. सुरेन्द्र जैन 'भारती', बुरहानपुर (मानद्)

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370

e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : www.digamberjainteerth.com

'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड, मुंबई के सेविंग खाता नं.13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक, मुंबई के सेविंग खाता नंबर 001210100017881 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें.

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

विज्ञापन आमंत्रित हैं.

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखको के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

इस अंक में

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज संघ द्वारा तीर्थ जीर्णोद्धार	6
निमाड़ का सुप्रसिद्ध तीर्थ बावनगजा	9
माणिकबाई अमृतलालजी पाड़लिया यात्री निवास का लोकार्पण	11
लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज हो चुका है दादाबाड़ी, कोटा का नाम	12
108 जिन प्रतिमाएं नवीन वेदी पर हुई विराजमान	14
भोजपुर में मानतुंगाचार्यजी की जीर्णोद्धारित चरण छत्री का लोकार्पण	16
श्री सम्मेदशिखर क्षेत्र को धार्मिक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित	18
प्राचीन तीर्थ अतिशय क्षेत्र चन्द्रवाड़	21
प्राचीन क्षेत्र ढिंढोरी, जिला शहपुरा	26
पशु क्रूरता कानून कितना न्याय संगत?	28
विदिशा-शीतलधाम में ट्रस्टियों का शपथग्रहण समारोह	31
हमारे नये बने सदस्य	33

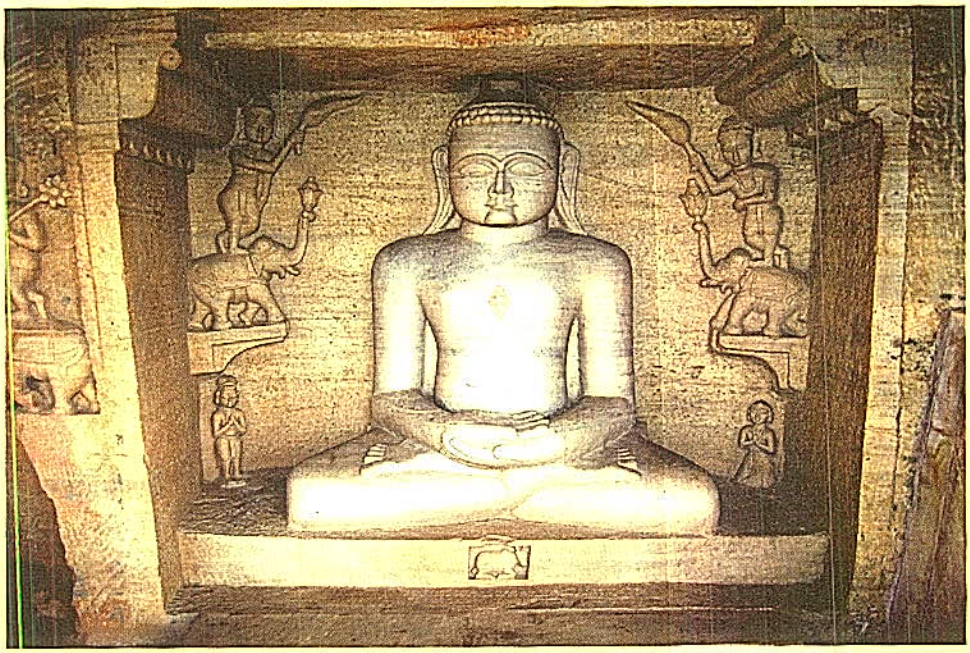

1008 श्री आदिनाथ भगवान, खंदारगिरि

संसार में सबसे बड़ा पाप रात्रि भोजन है और सबसे बड़ा पुण्य प्रभु की पूजा है

सन्त शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज एवं उनके संघ द्वारा तीर्थ जीर्णोद्धार

–कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन 'भारती'

परम पूज्य वरिष्ठतम आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज इस युग के प्रतिनिधि सन्त हैं, सन्तशिरोमणि हैं। उनकी गौरव गाथा आज सम्पूर्ण विश्व में गायी जाती है। उनकी प्रेरणा से हुए कार्यों की गूंज सम्पूर्ण जगत् में सुनाई देती है। आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने जहाँ सैकड़ों चेतन कृतियों का निर्माण साधु पद देकर किया वहीं साहित्य जगत् में अनेक संस्कृत, हिन्दी शतक एवं मूकमाटी जैसा महाकाव्य लिखकर युगों-युगों के लिए संस्कृति परक साहित्य प्रदान किया। आज उनके साहित्य के बिना संस्कृत एवं हिन्दी साहित्य की चर्चा अधूरी मानी जाती है। अनेक विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में मूकमाटी को स्थान मिला है। यह गौरव की बात है। उनके द्वारा प्रेरित मांस निर्यात निरोध आंदोलन, गौ रक्षा आंदोलन ने आमजन मानस को आंदोलित किया है और प्रकृति जीवों के प्रति अपना प्यार जगाया है। उनके द्वारा जहाँ अनेक तीर्थों का जीर्णोद्धार हुआ वहीं सर्वोदय तीर्थ, अमरकंटक, श्री चन्द्रगिरि तीर्थ, डोंगरगढ़, सिद्धोदय तीर्थ नेमावर आदि के निर्माण से जन भक्तिभावना को आधार एवं आस्था का सबल संबल मिला है। इन तीर्थों के अभ्युदय से हजारों वर्षों के लिए जैन संस्कृति और तीर्थ परम्परा सुरक्षित हुई है। अगर प्राचीन तीर्थों के जीर्णोद्धार की दृष्टि से उनके उपकार को देखें तो हमें मुक्तागिरि, थूबोनजी, कुण्डलपुर, बीनाबारहा, रामटेक, बहोरीबंद, पनागर, कुण्डलगिरि-कोनी जी, पिसनहारी मढ़िया जी में नन्दीश्वर द्वीप आदि अनेक तीर्थों के रूप-स्वरूप स्मरण में आ जाते हैं। तीर्थ भावना के विकास की दृष्टि से आपकी प्रेरणा से चिकित्सा के क्षेत्र में सागर मध्यप्रदेश में भाग्योदय तीर्थ का निर्माण, दयोदय तीर्थ, जबलपुर (तिलवारा घाट), चन्द्रगिरि तीर्थ, डोंगरगढ़, शांतिगिरि तीर्थ, रामटेक में प्रतिभा स्थलियों का निर्माण, श्री पिसनहारी मढ़िया जी में प्रशासकीय प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना, जबलपुर में ही श्री वर्णी दिगम्बर जैन गुरुकुल का पुनरोद्धार आदि ऐसे कार्य हैं जिन्हें कोई भी कृतज्ञ समाज विस्मृत नहीं कर सकता। इस तरह तीर्थ, शिक्षा, गौ संरक्षण, व्यसन मुक्ति आदि के क्षेत्र में आपके कार्य वंदनीय हैं, अनुकरणीय हैं।

आपकी कलम से तीर्थवंदना के स्वर जब अभिव्यक्त होते हैं तो आमजन भी उनसे प्रभावित होते हैं। वे श्रमणबेलगोला स्थित गोम्मटेश प्रभु के प्रति अपनी भक्ति दिखाते हुए कहते हैं कि-

मृदुतम बेल लताएँ लिपटीं, पग से उर तक तुम तन में,
कल्पवृक्ष हो, अनल्प फल दो, भविजन को तुम त्रिभुवन में।
तुम पद-पंकज पर अलि बन, सुरपति-गण करता गुन-गुन है;
गोमटेश प्रभु के प्रति, प्रतिपल,
वन्दन अर्पित तन-मन है।।

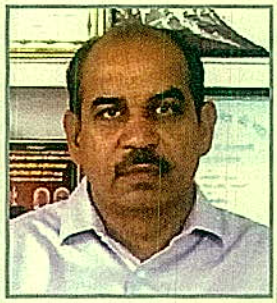

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर जी, श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र गिरनार जी, चम्पापुर जी, पावापुर जी तथा अन्य सभी सिद्धक्षेत्रों के संरक्षण की चिन्ता उन्हें होती है और वे समय-समय पर इसे अभिव्यक्त भी करते रहते हैं। उनकी प्रेरणा से उनके ही सान्निध्य में होने वाले पंचकल्याण प्रतिष्ठा महोत्सवों की बचत राशि श्री दिगम्बर सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर जी, सिरपुर तीर्थ, गिरनार जी आदि के लिए भेजी गयी है। उनकी सदा चाह रही है कि सुदूरक्षेत्रों में तीर्थों की सुरक्षा के लिए जैन समाज के परिवारों को आश्रय दान देकर बसाया जाए। वहाँ ऐसे शैक्षणिक, औद्योगिक उपक्रम संचालित हों जिससे जैनों का आवागमन वहाँ निरंतर बना रहे। उनकी इस भावना को मूर्तरूप देने की आवश्यकता है।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज वर्तमान में जैन समाज को विशेष रूप से प्रेरणा दे रहे हैं कि वह अहिंसक खेती प्रारंभ करे; जो आज के समय की, मानव स्वास्थ्य के लिए जरूरी मांग है। दूसरे वे इण्डिया के नाम को समाप्त कर उसे भारत या भारतवर्ष के रूप में प्रतिष्ठित करना चाहते हैं ताकि तीर्थंकर ऋषभदेव की संस्कृति-ऋषि बनो या कृषि करो को संरक्षित किया जा सके। उनके ही पुत्र चक्रवर्ती भरत के नाम पर बना यह भारत या भारतवर्ष स्वावलंबी बने; यह उनकी भा... है। भाषा के स्तर पर वे सम्पूर्ण भारतवर्ष में अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी को लाना चाहते हैं ताकि हिन्दी के साथ साथ प्राकृत, पालि, अपभ्रंश, कन्नड, तमिल, तेलुगु, मराठी, उड़िया, मलयालम आदि भाषाओं का विकास हो सके।

उनके प्रेरक कार्य समाज और संस्कृति के, तीर्थ और भक्ति के, शिक्षा और संस्कार के लिए हैं। इसके बाद भी वे अपनी श्रमणचर्या का दत्तचित्त और अनुरक्त होकर पालन करते हैं। उनका चिन्तन सदा इस प्रकार रहता है कि-

ये नाम, काम, धन, धाम सभी विकार,
तूँ शीघ्र त्याग इनको, बन निर्विकार।
साकार हों फिर सभी तब जो विचार;
साक्षात्कार प्रभु से, निज में विहार।।

एक कदम दुनिया से आगे वही लोग चलते हैं, अंगारों के पथ पर जिनके पांव नहीं जलते हैं।

ऐसे महनीय सन्त को हम सब उनके उपकार के लिए नमोस्तु निवेदित करते हैं।

परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की तीर्थ जीर्णोद्धार, तीर्थ संरक्षण एवं नवीन तीर्थ स्थापना का अनुगमन करने वाले उनके ही प्रमुख शिष्य हैं- **परम पूज्य मुनिपुङ्गव श्री सुधासागर जी महाराज**। उनके विषय में कहा जा सकता है कि-

परम पूज्य सन्त शिरोमणि महाकवि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के आज्ञानुवर्ती परम प्रभावक शिष्य परम पूज्य मुनिपुङ्गव श्री सुधासागर जी महाराज जैन जगत् में चर्चित एवं अर्चित सन्त हैं जिनकी कीर्ति, उनकी गुरुभक्ति, संयमर्शीलता, तपश्चरण, तीर्थ जीर्णोद्धार, नवतीर्थ स्थापना, शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में प्रेरणा, शिक्षण संस्थानों, छात्रावासों एवं पब्लिक स्कूलों की स्थापना, प्रेरक प्रवचन, शान्तिधारा, श्रावक संस्कार शिविर, व्यसन मुक्ति, आध्यात्मिक कार्यों के कारण सम्पूर्ण विश्व में है। वे जो कहते हैं, वह करते हैं। वे जो कह देते हैं वह हो जाता है। आज सारा संसार उन्हें हसरत भरी निगाहों से देखता है कि वे आयें तो हमारे मनोवांछित कार्य सफल हों। उनके द्वारा विगत 25 वर्षों में जो प्रेरक कार्य करवाये गये हैं, वे समाज के लिए अनुकरणीय एवं श्लाघनीय हैं।

परम पूज्य मुनिश्री का जन्म ग्राम ईसुरवारा (सागर,म.प्र.) में हुआ। पिता श्री रूपचंद जी एवं माता श्रीमती शांतिदेवी के पुत्र जयकुमार की प्रारंभिक शिक्षा ईसुरवारा एवं सागर में हुई। क्षुल्लक दीक्षा दि. 10 जनवरी, 1980, ऐलक दीक्षा दि. 15 अप्रेल, 1982 एवं मुनि दीक्षा दि. 25 सितम्बर, 1983 को हुई थी। आपके दीक्षा गुरु आचार्य श्री विद्यासागर जी हैं। संयम पथ पर आपका कर्म क्षेत्र मुख्यतः बुंदेलखंड एवं राजस्थान रहा है। आपके प्रभाव कार्यों को कुछ पन्नों में नहीं समेटा जा सकता।

मुनिश्री ने इतने तीर्थों का जीर्णोद्धार कराया है कि वे 'तीर्थ जीर्णोद्धारक' के रूप में प्रसिद्ध हैं। आज उनकी प्रशस्त प्रेरणा से अनेक तीर्थ जीर्ण अवस्था को छोड़कर पुराने वैभव एवं नवीन आभा के साथ भक्तों की श्रद्धा के केन्द्र बन गये हैं। प्रमुख क्षेत्र हैं- देवगढ़ (ललितपुर), बजरंगगढ़ (गुना), संघीजी मन्दिर सांगानेर, भव्योदय तीर्थ बीनागंज (गुना), चमत्कार जी (स.माधोपुर), सर्वतोभद्र क्षेत्र रणथम्भौर किला, दादाबाड़ी नसियां कोटा, बिजौलिया (भीलवाड़ा), चाँदखेड़ी आदि।

नव मन्दिरों के निर्माण में प्रमुख हैं-दिगम्बर जैन ज्ञानोदय अतिशय क्षेत्र नारेली (अजमेर-राज.) का विशाल परिसर में बहुउद्देश्यीय सृजन। तीर्थ पर श्री आर.के.मार्बल परिवार की ओर से भव्य, कलात्मक श्री आदिनाथ जिनालय का मार्बल शिल्प दर्शनीय है। अन्य मन्दिरों में श्री

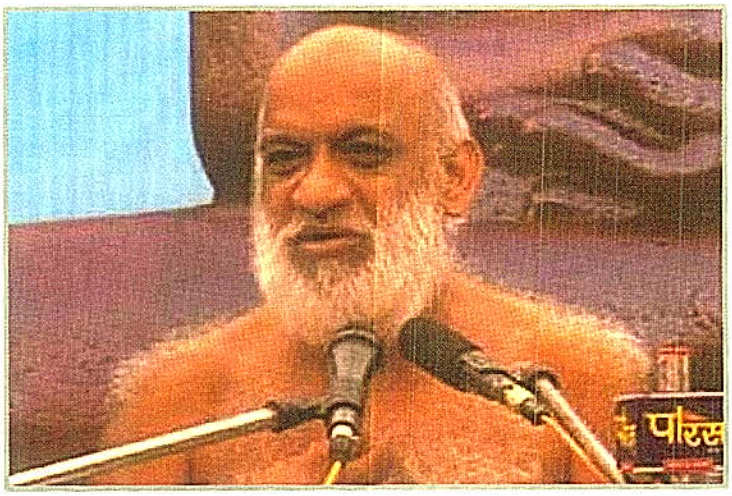

पार्श्वनाथ मन्दिर, कोटा जं., सुदर्शनोदय तीर्थ, आंवा (टोंक-राज.), महावीरनगर मन्दिर, कोटा, क्षेत्रपाल मन्दिर, ललितपुर, पुण्योदय अतिशयक्षेत्र दादाबाड़ी, कोटा जो एक रिकार्ड समय में पूरा हुआ है, उस पर 121 किलो वजनी चांदी के छत्रत्रय, जिन पर भक्तामर स्तोत्र, सोलह स्वप्न, अष्ट प्रतिहार्य उत्कीर्ण है तथा हीरा-मोती जड़े हैं। अनुपम रचना के कारण इसे 'लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड्स' एवं 'गिनीज बुक ऑफ रिकार्ड्स्' में सम्मिलित किया गया है। विशाल आदिनाथ मूर्ति के अलावा त्रिकाल चौबीसी भव्य है। मुनिश्री की प्रेरणा से तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय कोटा में मान स्तम्भ एवं ऑडिटोरियम का निर्माण हो रहा है। सांगानेर में वृद्धाश्रम एवं नारेली में वानप्रस्थ आश्रम स्थापित हो चुके हैं।

मुनिश्री अच्छे वास्तुविज्ञ हैं। उदाहरण हैं-चाँदखेड़ी के उत्तर द्वार को खुलवा कर कुबेर द्वार खोल दिया। अजमेर स्थित सोनी नसियां, हनुमान ताल मन्दिर, जबलपुर, विभिन्न शहरों एवं मन्दिरों में वास्तु सुधार (दोष) कर नई दिशा दी है। वास्तु सुधार का परिणाम है कि सांगानेर, पद्मपुरा, टोंक, सवाई-माधोपुर आदि तीर्थ भव्यता को प्राप्त हो गये हैं।

मुनिश्री ने सन् 1994 में एवं पुनः 1999 में संघीजी मन्दिर, सांगानेर में 108 जिनबिम्बों को गुफा से बाहर लाकर दर्शन कराया। चाँदखेड़ी में भी स्फटिक प्रतिमाओं को भूगर्भ से निकाल कर दर्शन करवाये। यह किसी चमत्कार से कम नहीं था, जिनकी वजह से ये तीर्थ अनेक अतिशयों एवं समृद्धि को प्राप्त हुये हैं।

चातुर्मास के समय विशाल श्रावक संस्कार शिविर, स्वाध्याय की प्रेरणा, मन्दिरों में व्यवस्थित अभिषेक एवं शांतिधारा आपकी प्रेरणा से शुरु हुई है। शताधिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव आपके सान्निध्य में सम्पन्न हुये हैं। देवगढ़, अशोकनगर, ललितपुर में नौ भव्य गजरथों के आयोजनों का विश्व कीर्तिमान आपके नाम है। वर्ष

मीठा बोलने वाला कभी हितैषी नहीं होता, नमक की तरह कड़वा ज्ञान देने वाला ही सच्चा हितैषी होता है

2015-16 में आपने भीलवाड़ा, गुलगांव, चेची आदि स्थानों पर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित करवाकर महती धर्मप्रभावना की है। अनेक जिनमन्दिरों का अल्प समय में निर्माण एवं भूगर्भ से प्राप्त मूर्तियों का संरक्षण करवाया है।

विद्वानों के प्रति आपका असीम वात्सल्य, आचार्य ज्ञानसागर विचार-विमर्श केन्द्र की स्थापना (सन् 1994), श्रमण संस्कृति बोर्ड की स्थापना, विभिन्न शोध गाष्ठियों का आयोजन, महाकवि ज्ञानसागर जी की साहित्यिक प्रतिष्ठा एवं समग्र साहित्य का प्रकाशन आदि कार्य उनकी प्रेरणा से हुये हैं। यह जैन साहित्य समृद्धि की दिशा में महत्त्वपूर्ण प्रयास है। गोष्ठियों में पठित आलेखों का ग्रंथाकार प्रकाशन भी हुआ है।

मुनिश्री स्वयं कवि एवं लेखक हैं- आपके प्रवचनों पर अनेकों पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती' के सम्पादकत्त्व में इन कृतियों को 'जिनवाणी सुधासागर' के नाम से अनेक भागों में संकलित कर प्रकाशित किया गया है। आपकी लगभग 40 पुस्तकों/ग्रन्थों में प्रमुख है- दश-धर्म-सुधा, अध्यात्म-सुधा, कविता-सुधा (काव्य),आत्म-सुधा, विवेक-सुधा, दिगम्बर-सुधा, अमृत वाणी, जिये तो कैसे जिये, चित्त चमत्कार-सुधा, मुनि का मुखरित मौन, माँ मुझे मत मारो, नग्नत्व क्यों और कैसे, अधोसोपान, जीवन एक चुनौती, श्रुतदीप आदि। अधिकांशतः आपके प्रवचन संग्रह है।

जैनधर्म, दर्शन, साहित्य की शिक्षा के प्रति संरक्षण की भावना से श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर की स्थापना आपकी प्रेरणा से हुई। यहाँ से शिक्षित विद्वान् पूरे भारत में धर्म प्रभावना कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त निम्न संस्थानों की स्थापना भी आपकी प्रेरणा से हुई।

दिगम्बर जैन सुधासागर कन्या इन्टर कॉलेज, ललितपुर, सुधासागर कन्या महाविद्यालय, ललितपुर, पब्लिक स्कूल,बिजौलिया, आंवा, टोंक एवं चाँदखेड़ी आदि।

व्यसन (मद्य, मांस, मधु, जमीकंद), रात्रि भोजन एवं मृत्यु भोजन का त्याग, गर्भपात एवं कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध जनजागरण आदि कार्य प्रमुख हैं। विकलांगों को कृत्रिम अंग प्रदान करवाने (कोटा में), ओलावृष्टि से फसल नुकसान की पूर्ति हेतु अनाज वितरण करवाने की प्रेरणा दी। अभावग्रस्थ विद्यार्थियों को शुल्क, ड्रेस, पुस्तकें आदि दिलाने में भी सक्रिय प्रेरणा रही।

आपकी प्रेरणा से ललितपुर, सीकर, नारेली आदि स्थानों पर गौशाला की स्थापना हुई है। इससे जीव दया और अहिंसा के प्रति जागृति आई है। उपेक्षित मन्दिरों जैसे देवगढ़, खनियाधाना, गोलाकोट, सवाई-माधोपुर (रणथम्भौर किले में स्थित) आदि मन्दिरों में देवदर्शन एवं पूजा के लिए बस सेवायें आरंभ करवाई। इस तरह के और भी अनेक विशिष्ट कार्य आपकी प्रेरणा से सम्पादित हो रहे हैं।

आप अपनी तपस्या, ज्ञानाराधना, साहित्य सृजन, संस्थाओं की स्थापना, तीर्थ जीर्णोद्धार, नवनिर्माण एवं लोकोपयोग योजनाओं की सफलता के कारण श्रमण संघ में उच्चासन को प्राप्त हो गये हैं। उनके विराट व्यक्तित्व को सैकड़ों शोध-प्रबंधों में भी समेटा नहीं जा सकता। आपके कृतित्व की यशोगाथा/अवदान सुदीर्घ काल तक गुंजित होती रहेगी। आपके चरणों में नमोस्तु। मेरा शत-शत नमन।

परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के एक और तीर्थ संरक्षक शिष्य हैं **मुनि श्री प्रमाणसागर जी महाराज**; जिनकी पावन प्रेरणा से तीर्थराज सम्मेदशिखर जी के कायाकल्प का कार्य उ द्वारा स्थापित **सेवायतन** के माध्यम से किया जा रहा है। इसे झारखण्ड सरकार ने पुरस्कृत भी किया है। उनकी ही प्रेरणा से सम्मेदशिखर जी में **गुणायतन** का निर्माण किया जा रहा है। इसके माध्यम से संसार का स्वरूप एवं मोक्षमार्ग तथा मोक्ष का निदर्शन किया जायेगा। यह एक महनीय कार्य है। सम्पूर्ण भारतवर्ष का जैनसमाज इससे जुड़ रहा है। पूज्य मुनिश्री की प्रेरणा से अनेक बार तीर्थराज सम्मेदशिखर जी के पहाड़ों से कचरा एकत्रित कर नीचे लाया गया है ताकि क्षेत्र स्वच्छ एवं पवित्र बना रहे।मुनि श्री के यह सभी प्रेरक प्रकल्प महत्त्वपूर्ण हैं। मेरा उन्हें शत-शत नमन।

इसी तरह आचार्य श्री के अन्य शिष्य परम पूज्य मुनिश्री समयसागर जी महाराज, परम पूज्य मुनिश्री योगसागर जी महाराज, परम पूज्य मुनिश्री समतासागर जी महाराज,परम पूज्य मुनिश्री अजितसागर जी महाराज,परम पूज्य मुनिश्री अभयसागर जी महाराज, परम पूज्य मुनिश्री प्रसादसागर जी महाराज, परम पूज्य मुनिश्री संभवसागर जी महाराज, पूज्य आर्यिका श्री गुरुमति जी, आर्यिका श्री दृढ़मति जी, आर्यिका श्री पूर्णमति जी, आर्यिका श्री मृदुमति जी आदि भी तीर्थसंरक्षण के लिए निरंतर प्रेरणा देती रहती हैं। इनके उपकारों को समाज कभी भुला नहीं सकता। हमें इनके प्रति कृतज्ञ भाव रखना चाहिए। **भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री सिंघई सुधीर जैन ने परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज, परम पूज्य मुनिपुङ्गव श्री सुधासागर जी महाराज एवं परम पूज्य मुनिश्री प्रमाण सागर जी महाराज के इन उपकारों के प्रति बहुमान प्रकट करते हुए सादर नमन किया है।**

जीना सरल है, हारना जीतना सरल है, तो फिर कठिन क्या है... 'सरल' होना ही सबसे कठिन है ।

निमाड़ का सुप्रसिद्ध तीर्थ बावनगजा

-डॉ. नरेन्द्र कुमार जैन, 'भारती'
ए-27 न्यू नर्मदा विहार, सनावद (खरगोन) म.प्र.

भारतीय संस्कृति में धार्मिक तीर्थों का विशेष महत्व है। तीर्थ हमारी आद्य संस्कृति और सभ्यता के जीवन्त प्रतीक हैं। भारत की विभिन्न संस्कृतियों में भी साम्यता दिखाई देती है। यहाँ हिन्दू, जैन और बौद्ध संस्कृति के प्रतीक विपुल मात्रा में पाये जाते हैं। जो हमारे राष्ट्र की पहचान हैं। भारतीय संस्कृति और सभ्यता पर नजर डालें तो ऐसा प्रतीत होता है कि विश्व की प्रमुख सभ्यताओं से उसका काफी लेन-देन हुआ है। व्यापारिक विकास के साथ-साथ लोगों ने सांस्कृतिक विकास के लिए भी प्रयास किये। यही कारण है कि यहाँ पर विभिन्न धर्म, जाति, वर्ग और सम्प्रदाय के व्यक्ति पाये जाते हैं जो अपनी धार्मिक मान्यताओं के साथ जीवन व्यतीत करते हैं। जब हम यहाँ की सांस्कृतिक ऊँचाई व धार्मिक महत्ता का अध्ययन करते हैं तो यहाँ यत्र-तत्र बिखरी हुई जैनमूर्ति कला और पाषाण कला के दर्शन भी प्रचुर मात्रा में होते हैं। जब नर्मदा क्षेत्र का सर्वेक्षण किया गया तो यह पाया गया कि मालवा तथा निमाड़ क्षेत्र में भी जैन पुरातत्त्व एवं जैन मन्दिरों के पुरावशेष पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं।

भारतवर्ष के हृदय स्थल मध्यप्रदेश में स्थित मालवा तथा निमाड़ का क्षेत्र भौगोलिक तथा ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा है क्योंकि यह उत्तर और दक्षिण भारत का सन्धि स्थल है। निमाड़ के दो भाग हैं- पूर्वी निमाड़ और पश्चिमी निमाड़। पूर्वी निमाड़ में खण्डवा, बुरहानपुर तथा पश्चिमी निमाड़ में खरगोन, बड़वानी जिले आते हैं। सम्पूर्ण निमाड़ क्षेत्र में वास्तुकला एवं मूर्तिकला के अनेक भग्नावशेष दिखाई देते हैं। इस क्षेत्र के जैन तीर्थ स्थलों में बड़वानी, पावागिरि ऊन तथा सिद्धवरकूट तीर्थ सिद्धक्षेत्र के नाम प्रसिद्ध हैं। ये तीर्थ जैन संस्कृति का सच्चा दिग्दर्शन कराते हैं। तीर्थ या तीर्थक्षेत्र एक सर्व व्यापी अवधारणा है। प्रत्येक धर्म के श्रद्धालुओं के अपने-अपने तीर्थस्थल हैं जहाँ की वंदना, पूजा, आराधना कर व्यक्ति अपने को धन्य मानते हैं क्योंकि इनकी धारणा है कि तीर्थ ध्यान सिद्धि और आत्मशुद्धि के उपयुक्त स्थल होते हैं।

जैनदृष्टि से देखें तो भवसागर से पार उतारने वाले, सबका कल्याण करने वाले पवित्र स्थानों को तीर्थस्थल कहा जाता है। धवला और गोम्मटसार में तीर्थ क्षेत्रों को क्षेत्र मंगल की संज्ञा दी गई है। वीतरागी महापुरुषों के संसर्ग से जो भूमि पवित्र होती है वह तीर्थ कहलाती है। तीर्थस्थलों पर अनेकों मुनियों ने तपस्या कर कर्मों का क्षय किया है। जिन क्षेत्रों से तीर्थंकर या तीर्थंकरों या मुनियों ने घोर तपस्या कर मोक्ष प्राप्त किया है वे स्थान निर्वाण क्षेत्र कहलाते हैं। जहाँ तीर्थंकरों के गर्भ, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान के कल्याणक हुए है वे कल्याणक क्षेत्र तथा जहाँ पर जैन मूर्तियों में कोई विशेष चमत्कार हुआ हो वे अतिशय क्षेत्र कहलाते हैं। इस तरह से देखें तो निमाड़ के तीनों क्षेत्र बड़वानी, पावागिरि ऊन तथा सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्र हैं। इन सिद्धक्षेत्रों का नाम प्रमुख जैन ग्रन्थों और निर्वाणकाण्ड जैसी स्तुतियों में मिलता है। श्रद्धालु जन आत्मकल्याण की भावना लेकर इन तीर्थों की भावपूर्वक वंदना करते हैं।

सुप्रसिद्ध सिद्धक्षेत्र बावनगजा (बड़वानी) का जैन सिद्धक्षेत्रों में महत्वपूर्ण स्थान है। मध्यप्रदेश के बड़वानी नगर के समीप 8 किलोमीटर दूर स्थित बावनगजा प्रसिद्ध तीर्थस्थल है। इन्दौर से इसकी दूरी दक्षिण पश्चिम दिशा में धामनोद टेकरी होते हुए लगभग 150 किलोमीटर तथा धामनोद जुलवानिया होते हुए लगभग 165 कि.मी. दूर है। इस सिद्धक्षेत्र का सर्वप्रथम उल्लेख आचार्य कुन्दकुन्द द्वारा रचित निर्वाण भक्ति (प्राकृत भाषा) में निम्न रूप में मिलता है-

बड़वाणी वरणयरे दक्खिण भायम्मि चूलगिरि सिहिरे।
इंदजिय कुम्भकरणे णिव्वाणगया णमो तेसिं।।

इसका हिन्दी निर्वाणकाण्ड भाषा में इस तरह उल्लेख है-

बड़वानी बड़नयर सुचंग दक्षिणदिसि गिरिचूल उतंग।
इन्द्रजीत अरु कुम्भ जु कर्ण, ते बन्दों भवसायर तर्ण।।

बड़वानी के समीप दक्षिण दिशा में सत्पुड़ा पर्वत मालाओं की सुरम्य तलहटी में चूलगिरि है जहाँ से रावण के पुत्र और भाई इन्द्रजीत व कुम्भकर्ण दिगम्बर मुनि दीक्षा ग्रहण कर मुक्त हुए थे। यहाँ सतपुड़ा की पर्वत मालाओं में ही बावनगजा नाम से विख्यात प्रथम तीर्थंकर श्री भगवान् ऋषभदेव जी की अनुपम कलापूर्ण खड्गासन प्रतिमा विराजमान है। 84 फुट उन्नत यह मूर्ति भारत में ही नहीं वरन् विश्व में सबसे बड़ी मानी जाती है। अनाम शिल्पकार के कुशल हाथों ने अपनी शिल्प प्रवण छैनी और हथौड़ों से पर्वत के पाषाणपटल पर शिरोभाग से चरणतल तक देवत्व और वीतरागता के जो भाव साकार किए हैं उसे देखकर श्रद्धालु और कला मर्मज्ञ मोहित होकर घंटों अपलक उसे निहारते हैं। इस मूर्ति का सर्वप्रथम उल्लेख 12-13वीं शताब्दी के विद्वान् यति मदनकीर्ति ने शासन चतुस्त्रिंशिका शीर्षक लघु कृति में किया है। उन्होंने लिखा है कि अर्ककीर्ति नाम के एक राजा द्वारा इस मूर्ति का निर्माण हुआ है किन्तु तत्सम्बन्धी कोई चिन्ह अथवा शिलालेख प्राप्त नहीं हैं। यति मदनकीर्ति के उल्लेख के बाद यह तो निश्चित है कि यह उनसे पहले की मूर्ति है। बावनगजा महामस्तकाभिषेक स्मारिका 1991 में प्रकाशित जानकारी के अनुसार 84 फुट की इस मूर्ति का विवरण इस प्रकार है-

मूर्ति की कुल ऊँचाई	84 फुट
एक भुजा से दूसरी भुजा का विस्तार -	46 फुट 2 इंच
कमर से एड़ी तक	37 फुट
सिर का घेरा	26 फुट
पैर की लम्बाई	13 फुट 9 इंच
नाक की लम्बाई	3 फुट 11 इंच
आँख की लम्बाई	3 फुट 3 इंच

किस्मत कितनी ही बुलंद क्यों न हो, उसे परिश्रम की 'चौखट' से गुजरना पड़ता है।

कान की लम्बाई	9 फुट 8 इंच
एक कान से दूसरे कान तक की दूरी	17 फुट 6 इंच
पॉव के पंजे की चौड़ाई	5 फुट

यह मूर्ति पहाड़ी में स्थित एक ही पाषाण में उकेरी गई है और निराधार खड़ी है। इस मूर्ति की सही ढंग से देखभाल रखरखाव न होने से पहाड़ सहित इस मूर्ति का भी क्षरण होने लगा। इस लिए समय-समय पर इसका जीर्णोद्धार किया गया। सर्वप्रथम वि.सं. 1229 (ई.स. 1072) में टोडरशाह ने मतिचन्द्र गुरु की आज्ञा से पंचकल्याणक प्रतिष्ठा करवाई। वि.स. 1223, 1380 एवं 1508 में मूर्ति के जीर्णोद्धार के प्रमाण मिलते हैं। वि.सं. 1987 (ई.स. 1930 में श्री सेठ हरसुख जी पहाड़िया सुसारी एवं लाला श्री देवी सहाय जी व 1986 में पूज्य एलाचार्य (वर्तमान में आचार्य) श्री विद्यानंद जी महाराज की प्रेरणा से साहू अशोक कुमार जैन तथा श्री बाबूलाल पाटोदी की देखरेख में समग्र जैन समाज तथा जनवरी 2006 में श्री भरत मोदी एवं उनकी पत्नी श्रीमती कुसुम मोदी द्वारा इस मूर्ति का जीर्णोद्धार किया गया। जिससे भगवान् आदिनाथ के स्वरूप परिवर्तन के बगैर दो वर्षों से जीर्णोद्धार कार्यक्रम व डोम, प्रतिमा के ऊपर बनी छत की ऊँचाई 14 फीट तक बढ़ा दिये जाने से यह और अधिक जीवंत और मनोहारी हो उठी है। पूर्व में प्रतिमा के शिरोभाग के ऊपर डोम की ऊँचाई कम होने व ताँबे की प्लेटों का मचान होने से उस पर सूर्य का प्रकाश नहीं पहुँच पाता था तथा यह वास्तु विज्ञान की दृष्टि से भी उचित नहीं था। अब आदिनाथ की प्रतिमा पर पूरी तरह से सूर्य की किरणों का प्रभाव पड़ रहा है। इसका बावनगजा नाम कैसे पड़ा? इसका संख्यात्मक संज्ञाकरण का रहस्य प्रकट करते हुए उपाध्याय गुप्ति सागर महाराज ने बताया कि पुरातन युग में लोगों ने किसी वस्त्र, भित्तिचित्र आदि को गजों (बड़ी ऊंगली से कोहनी की माप) के आधार पर नापने की प्रक्रिया को अपनाया था तो उन्होंने भगवान् आदिनाथ की इस प्रतिमा को भी उसी तर्ज पर गजों से नाप लिया। भगवान् आदिनाथ की 52 गज की प्रतिमा को हम गणितीय भाषा में 84 फीट कहते हैं बावनगजा की 84 फीट ऊँची मूर्ति 1008 इंच की होती है और तीर्थंकर के 1008 लक्षण और व्यंजन इसमें समाहित हैं। कुछ विद्वानों की मान्यता है कि यह प्रतिमा बीसवें तीर्थंकर भगवान् मुनिसुव्रतनाथ की समकालीन है और इसे रामायण कालीन शिल्पियों ने तैयार किया था।

क्षेत्र पर बावनगजा की मूर्ति के अतिरिक्त सतपुड़ा की सघन हरी भरी पर्वत श्रेणियों की तलहटी से लेकर सत्पुड़ा की सर्वोन्नत 1220 मीटर ऊँची पहाड़ी चूलगिरि के नाम से प्रसिद्ध है। चूलगिरि के शिखर पर स्थित कलात्मक मन्दिर इस क्षेत्र का सबसे मुख्य मन्दिर माना जाता है इसमें इन्द्रजीत और कुम्भकर्ण के चरण चिह्न बने हुए हैं। यहीं से इन्द्रजीत और कुम्भकर्ण के साथ असंख्य मुनि मुक्त हुए हैं। यहाँ पर वि.सं. 1131, 1242 की प्रतिमायें तथा 1116 एवं 1223 के शिलालेख मिलते हैं। मन्दिर में भगवान् की दर्जनों प्रतिमायें विराजमान हैं। क्षेत्र पर कुल 30 मन्दिर तथा 36 मूर्तियाँ एवं एक भव्य मानस्तम्भ है। उसी पहाड़ी से 14 कि.मी. दूर एक चबूतरा दिखाई देता था जिसे आदिवासी "मन्दोदरी महल" के नाम से पुकारते थे। जब व्यक्ति वहाँ पहुँचे तो वह एक जैन मन्दिर निकला जिसमें भगवान् पार्श्वनाथ की प्रतिमा विराजमान है।

इस सिद्धक्षेत्र पर कला वैभव सम्पन्न अन्य जिनालय भी इस क्षेत्र के महत्व को दर्शाते हैं। इन मन्दिरों में संगमरमर की प्रतिमायें विद्यमान हैं। भीतरी प्रवेश द्वार में वट वृक्ष के बाईं ओर नौ जिन मन्दिर हैं जिनमें काले और श्वेत पाषाण की खड्गासन और पद्मासन मुद्रा में भगवान् पार्श्वनाथ, भगवान् नेमिनाथ और भगवान् आदिनाथ की प्रतिमायें विराजमान हैं। मन्दिरों के तल पर रंगीन संगमरमरी पत्थरों की आकर्षक कारीगरी मन को लुभाती है। दस आकर्षक मन्दिरों में भी पाषाण प्रतिमायें विराजमान हैं। क्षेत्र की तलहटी में ही आचार्यकल्प श्री चन्द्र सागर जी महाराज और मुनि श्री शीतलसागर महाराज की चरण छत्रियाँ व चरण पादुकायें स्थापित हैं। यहीं पर वर्षों पुराना एक वृक्ष है जिसे व्यक्ति कल्पवृक्ष के नाम से पुकारते हैं। ऊपर की ओर जाने पर 84 फीट उत्तुंग श्री आदिनाथ स्वामी की प्रतिमा के कुछ दूर नीचे की ओर नौगजा मन्दिर है जिसमें तीन वेदियाँ हैं इसमें बीच की वेदी पर भगवान् आदिनाथ की आकर्षक प्रतिमा विराजमान है। चूलगिरि मन्दिर के पीछे आचार्य कुन्दकुन्ददेव का मन्दिर है। इन सभी जिनालयों का शिल्प वि[illegible] परिपक्व है एवं प्रतिमायें आस्था को बल देने वाली हैं।

पूज्य उपाध्याय श्री गप्ति सागर जी महाराज ने इस क्षेत्र की महत्ता बताते हुए कहा है कि "भगवान् आदिनाथ की प्रतिमा के दर्शन से मनुष्य अपनी चरम शुद्धि कर सकता है। प्रतिमा के सन्मुख जैसे दिन अस्त होता है वैसे शारीरिक व्याधियाँ भी अस्त हो जाती हैं। पं. नाथूलाल जी शास्त्री ने विश्व की विशालतम मूर्ति बावनगजा जी नामक लेख में इस क्षेत्र के सम्बन्ध में यह भावना व्यक्त की है- "बावनगजा एवं चूलगिरि प्राकृतिक स्थल हैं। यहाँ के अनुकूल वातावरण में चित्त की स्थिरता रहने से सहज ही आत्म साधना एवं आत्म जागृति होती है। हमने स्वयं अनुभव किया है कि यह स्थान बहुत शांत, पवित्र और उज्ज्वल विचारों का उद्बोधक है। विचारशील व्यक्तियों के लिए मोह निद्रा को दूर करने का यह एक कल्याणकारी साधन है। गृहस्थों को ऐसे तीर्थ पर जाकर तीर्थ वंदना द्वारा अपने सम्यग्दर्शन को परिपुष्ट करना चाहिए।

गृहस्थ लोगों को सम्यग्दर्शन की विशुद्धि के लिए एवं मन को पवित्र निर्मल और तनाव रहित बनाने के लिए बावनगजा जी की तीर्थ[illegible] अवश्य करना चाहिए। मनोवृत्ति को निर्मल बनाने के लिए पुण्यस्थल निमित्त माने जाते हैं। बावनगजा इसमें सार्थक भूमिका निभा सकता है। यहाँ आकर सम्पूर्ण त्याग की भावना भी कई लोगों के मन में आई है, आती है।

संदर्भ-

1. विश्व की विशाल मूर्ति : बावनगजा जी : लेख- पं. नाथूलाल जी शास्त्री, बावनगजा महामस्तकाभिषेक स्मारिका।
2. निर्वाण भक्ति (प्राकृत) का पद्य
3. बावनगजा महामस्तकाभिषेक वर्ष 2008 का प्रकाशित कैलेण्डर में लिखित
4. बावनगजा महामस्तकाभिषेक स्मानिका का सम्पादकीय अंश डॉ. अनुपम जैन प्रधान सम्पादक
5. बावनगजा महामस्तकाभिषेक स्मारिका में प्रकाशित श्री बाबूलाल जी पाटोदी का कथन।

यूं ही हम दिल को साफ रखा करते थे, पता नहीं था कि कीमत-चेहरों की होती है

माणिकबाई अमृतलालजी पाड़लिया यात्री निवास का भव्य लोकार्पण समारोह

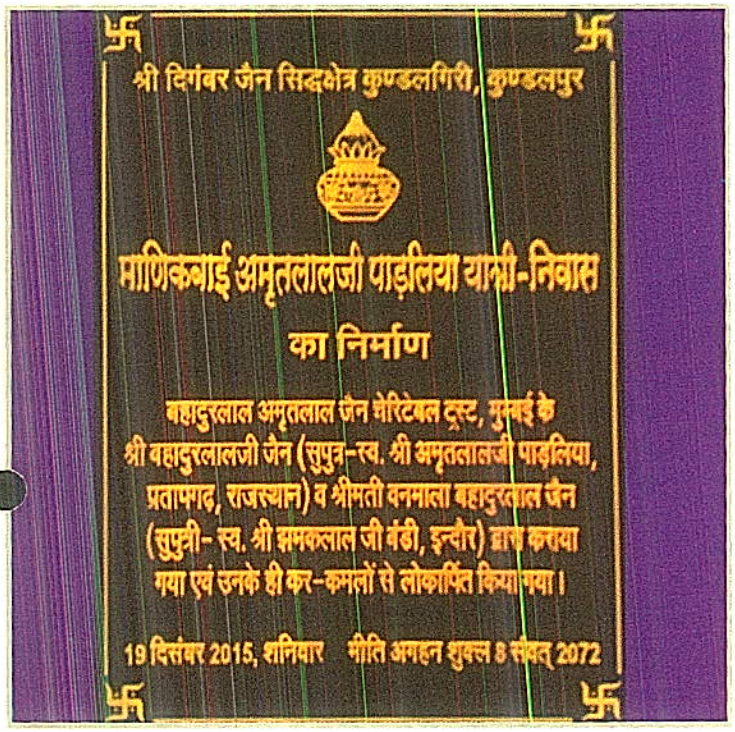

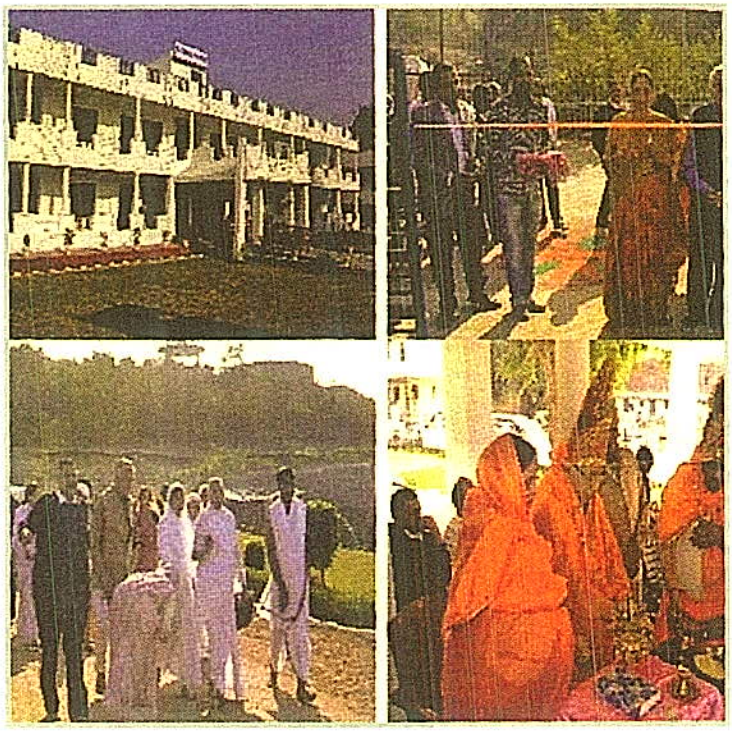

कुण्डलपुर- 19 दिसम्बर, 2015. ऐतिहासिक महत्व के कारण कुण्डलपुर जैन तीर्थक्षेत्र अत्यधिक प्रसिद्ध है अतएव श्रावक-श्राविकाओं का यहाँ आना-जाना लगा रहता है। ऐसे तो यहाँ ठहरने और रुकने के लिये काफी धर्मशालाएं हैं लेकिन आने वाले समय में इसमें लगातार वृद्धि आवश्यक होगी। मुंबई निवासी श्रेष्ठी श्री बी.एल.जैन एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती वनमाला जैन द्वारा एक वातानुकूलित यात्री निवास बनाने की भावना व्यक्त की गई जिसे श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र कुण्डलगिरि, कुण्डलपुर समिति ने सहर्ष धन्यवाद देते हुए स्वीकार किया।

इसके निर्माण की नींव गत 20 अक्टूबर 2013 दिन रविवार को परमपूज्य आचार्यश्री 108 वर्धमान सागर जी महाराज के पावन सान्निध्य में आयोजित भव्य 'शिलान्यास समारोह मे श्री बी.एल.जैन एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती वनमाला जैन पाडलिया के द्वारा 'माणिकबाई अमृतलालजी पाडलिया यात्री निवास के लिये भूमि पूजन एवं इसकी आधारशिला रखी गई।

इस अवसर पर परमपूज्य आचार्यश्री 108 वर्धमान सागर जी महाराज ने अपने पुण्य आशीर्वचन में श्रीमान् बी.एल.जैन एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती वनमाला जैन को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आपने अपनी दान की श्रृंखला में तीर्थयात्रियों की सुविधा के लिये अन्य जैन तीर्थों में भवन बनवाये हैं। श्री बी.एल.जैन- बी.के.बिरला ग्रुप की फ्लैगशिप कम्पनी- सेन्चुरी से सन् 1962 से जुड़े हुये हैं और उसमें व्होल डायरेक्टर है एवं सेन्चुरी ग्रुप के सीमेंट प्लॉटों के सीनियर प्रेसिडेंट के पद पर कार्यरत हैं। आपने भारत के प्रसिद्ध तीर्थक्षेत्र गिरनारजी में, तीर्थराज सम्मेदशिखरजी में यात्री सुविधा हेतु भवनों का निर्माण कराकर तीर्थ सेवा कर, तीर्थ भक्ति का जो उदाहरण प्रस्तुत किया है वह अनुकरणीय है। श्री बी.एल.जैन ने इन्दौर में बहादुरलाल अमृतलाल जैन छात्रावास का निर्माण कराया है जिसका लाभ हमारे समाज के बच्चों को मिल रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में आपका योगदान उल्लेखनीय है।

श्रेष्ठी श्री बी.एल.जैन एवं श्रीमती वनमाला जैन द्वारा इसका लोकार्पण आज अगहन शुक्ल नवमी दिन शनिवार 19.12.2015 को अपराह्न 12 बजे परमपूज्य आचार्यश्री 108 विद्यासागर महामुनिराज को संघ की ज्येष्ठ आर्यिका श्री 105 गुरुमति माताजी के साथ तीर्थ यात्रियों की सेवा के लिये समारोह पूर्वक जनता के लिए खोल दिया गया। इस यात्री निवास की निर्माण और देख-रेख का सारा कार्य समिति द्वारा किया गया। यह बहुत सराहनीय है तथा समिति के अध्यक्ष श्री संतोष सिंघई और उनकी समिति के अथक सहयोग के बिना यह संभव नहीं था।

इस समारोह में मुख्य अतिथि श्री बी.एल.जैन उनकी धर्मपत्नी श्रीमती वनमाला जैन के अतिरिक्त श्री संतोष सिंघई जी, श्री अमिताभ जैन जी एवं ट्रस्ट के अन्य पदाधिकारीगण मौजूद थे। श्री अरविन्द बंडी (इंदौर) तथा श्री पारसमल इन्टोडिया (मैहर) एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती संजू इन्टोडिया भी मौजूद रही। इसके अतिरिक्त कार्यक्रम में श्रावक तथा तीर्थयात्री मौजूद रहे। उपस्थित सज्जनों ने करतल ध्वनि से श्री बी.एल.जैन जी को क्षेत्र समिति के सहयोग से नवनिर्मित यात्री निवास के लोकार्पण की बधाई दी।

Anger burns the nature of man just like fire burns things.

लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज हो चुका है पुण्योदय तीर्थ क्षेत्र दादाबाड़ी, कोटा का नाम

श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन पुण्योदय अतिशय तीर्थ क्षेत्र, दादाबाड़ी के भव्य जिनालय में विराजित भगवान श्री आदिनाथ की मनोज्ञ प्रतिमा पर चांदी का नक्काशीदार १२० किलो वजनी छत्र स्थापित किया है। जिसे विश्व प्रसिद्ध 'लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड" में दर्ज करने का गौरव प्राप्त हुआ है।

अनेक वर्षों से दर्शनीय स्थली दादाबाड़ी नसियां जैन परिवारों के लिये पूजा एवं आराधना का स्थान रहा है। कोटा शहर के एक छोर पर होने के कारण कतिपय जैन बंधु यहां आकर कुछ समय ठहरने के पश्चात दर्शन पूजन करके वापस चले जाते थे।

समय ने करवट बदली शहर का विकास एवं विस्तार हुआ और शनैः शनैः दादाबाड़ी नसियां का भी विकास आरम्भ हो गया। प्रगति का अपना एक इतिहास है, जब कोई क्षेत्र प्रगति की ओर बढ़ता है तो उसकी चाल उस तेज गति से बहते हुए पानी के समान होती है, जो समस्त अवरोधों को तोड़ता हुआ अपनी मंजिल तय करता है। वर्ष २००१ में दादाबाड़ी नसियां पर आचार्य शिरोमणि श्री विद्यासागर महाराज के परम यशस्वी शिष्य मुनि पुंगव श्री सुधासागरजी महाराज, क्षुल्लक श्री धैर्य सागरजी एवं श्री गम्भीर सागर जी महाराज के वर्षायोग के लिये मंगल आगमन के समय से ही नसियां जी की प्रगति का इतिहास शुरु हो गया।

वर्षायोग २००१ के अंतर्गत बहती भक्ति मधुर बयार के बीच तत्वविद्, वास्तुविशेषज्ञ, चिंतक, प्रखर प्रवचनकर्ता मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज की आगमोक्त दृष्टि ने दादाबाड़ी जैन नसियां क्षेत्र में छिपे अतिशयकारी वैभव को पहचान लिया और जैन समाज के प्रबुद्ध लोगों को इस क्षेत्र के आंशिक वास्तुदोषों का परिहार कर जीर्णोद्धार कराने का सुझाव दिया। जैन समाज के श्रेष्ठी श्री हुकम जैन काका, श्री प्रकाश बज, श्री विरेन्द्र आदिनाथ, श्री राजेन्द्र जैन हरसोरा के अतिरिक्त दादाबाड़ी नसियां जी के तत्कालीन अध्यक्ष श्री महावीर जी कोठारी आदि के सहयोग के फलस्वरूप अतिशय क्षेत्र दादाबाड़ी के जीर्णोद्धार का कार्य प्रारम्भ कर दिया गया तथा मुनिश्री ने इस क्षेत्र को संपूर्ण भारतवर्ष में विख्यात कर दिया। इस क्षेत्र पर अनेक अतिशय, चमत्कार घटित हुये फलस्वरूप शहर के एक कोने में स्थित दादाबाड़ी नसियां क्षेत्र हाडौती संभाग एवं निकटवर्ती प्रदेशों में ख्याति के साथ लोकप्रिय हो गया।

मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज ने सूक्ष्म अध्ययन करके क्षेत्र के जीर्णोद्धार, निर्माण एवं विकास की महत्वपूर्ण योजना जैन समाज के श्रेष्ठियों के समक्ष रखी तथा समूचा निर्देशन करते हुए इस क्षेत्र के निर्माण कार्य का विस्तृत प्रारूप तैयार करने का भी आशीर्वाद दे दिया। गुरु आज्ञा शिरोधार्य करके नगर के श्रेष्ठी महानुभावों ने समन्वय स्थापित कर नसियां जी मंदिर के जीर्णोद्धार, नयी वेदियां, मान स्तम्भ आदि के साथ-साथ देश के सुदूर क्षेत्रों से आने वाले कोचिंग छात्रों के लिये व्यवस्थित छात्रावास आदि की बहुपयोगी योजनाओं का प्रारूप बनाकर मुनिश्री के आशीर्वाद से कार्य प्रारम्भ कर दिया।

श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन पुण्योदय तीर्थ क्षेत्र, दादाबाड़ी नसियां पर भव्य चार मंजिला जिनालय का निर्माण कराया जाकर प्रतिमा विराजित की गयी है। प्राचीन मंदिर का हाल जो लगभग ३५'७७ फीट का है, के ऊपर ७५'१२० का तीन मंजिला हॉल ट्रिपलेक्स पद्धति से बनाया गया है। प्रथम तल के हॉल में २३ फीट की ऊँचाई वाली संगमरमर की आकर्षक वेदी पर बिजोलिया सैण्ड स्टोन से निर्मित कमलासन वाली सवा सत्रह फीट की भगवान श्री आदिनाथ की मनोज्ञ प्रतिमा मुनिश्री सुधासागर जी महाराज के आशीर्वाद से श्री जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के समारोह में विराजमान की गयी है। यही नहीं इस प्रतिमा के दोनों ओर ऊपरी दोनों मंजिलों पर ६ फीट ऊँचाई वाली त्रिकाल चौवीसी के साथ-साथ भगवान श्री मुनिसुव्रतनाथ की प्रतिमा भी स्थापित की गयी है। मंदिर का निर्माण दिनांक २८.१.२०१४ को प्रारम्भ किया गया, जो दिनांक २८.२.२०१५ को लगभग पूर्ण हुआ। तीन-चार माह की अवधि में ऐसे भव्य जिनालय का निर्माण केन्टीलिवर पद्धति के आधार पर किया जाकर तथा कलात्मक वेदियां बनाकर प्रतिमाएं स्थापित करने का विश्व में एक कीर्तिमान है, जिसे वास्तुकार इंजी. अजय कुमार बाकलीवाल के निर्देशन में बनवाया गया है एवं इस जिनालय को विश्व प्रसिद्ध लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी वेदी कर दिया गया है।

सुसज्जित वेदी पर विराजित भगवान श्री आदिनाथ के अभिषेक [illegible] शांतिधारा करने के लिये इस कलात्मक वेदी के समीप आधुनिक एस्कालेटर (Escalator) बनाया गया है, जिससे सुगमता पूर्वक भगवान का अभिषेक एवं शांति धारा की जा सके। विश्व में ख्याति प्राप्त १२० किलो वजन वाला चांदी का नक्काशीदार छत्र भी भगवान श्री की प्रतिमा पर लगाया गया है। इस छत्र निर्माण का गौरव जयपुर के रजत शिल्पी जिन्होंने वर्ल्ड कप क्रिकेट की अनेक ट्रॉफियां बनाई हैं के द्वारा अथक परिश्रम एवं लगन के साथ यह छत्र बनाया गया है। श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन पुण्योदय तीर्थक्षेत्र, दादाबाड़ी, कोटा के अभिनव विकास में श्रेष्ठी श्री हुकुम जैन काका, श्री राजेन्द्र जैन हरसोरा, श्री प्रकाश बज, श्री मनोज जैन आदिनाथ, श्री पदमचन्द जैन एवं श्री विरेन्द्र आदिनाथ श्री कैलाशचन्द विनोद जैन सर्राफ के अतिरिक्त जैन गौरव श्रेष्ठी श्री अशोक पाटनी (आर.के.मार्बल्स) किशनगढ़ सहित अनेक श्रेष्ठी महानुभावों का अप्रतिम योगदान प्राप्त हुआ है।

जिनालय में अक्षरधाम की तर्ज पर कलात्मक कार्विंग का कार्य करवाया जाना प्रस्तावित है, जिसकी कार्ययोजना श्रेष्ठी दानदाताओं के साथ-साथ वास्तुकार शिल्पी इंजी. अजय बाकलीवाल द्वारा मुनिश्री की प्रेरणा से तै[illegible] की जा रही है।

भव्य, मनोज्ञ एवं आकर्षक प्रतिमाओं के लिये दिनांक ८ मार्च, २०१५ से आयोजित श्री जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अंतर्गत नव जिनालय में विराजित भगवानश्री आदिनाथ का दिनांक १५ मार्च को महामस्तकाभिषेक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें अनेक जैन श्रेष्ठी महानुभावों ने भाग लेकर पुण्यार्जन किया। इस क्षेत्र में स्थापित त्रिकाल चौवीसी एवं प्राचीन जिनालय का महत्व निरन्तर बढ़ रहा है। दर्शनों के लिये भारतवर्ष के सभी क्षेत्रों से सैकड़ों दर्शनार्थी पुण्योदय तीर्थक्षेत्र, दादाबाड़ी पर अभिषेक, पूजा-अर्चना कर पुण्यार्जन कर रहे हैं।

दादाबाड़ी पुण्योदय क्षेत्र कोटा नगर के मध्य स्थित है। कोटा जंक्शन से १० किमी. की दूरी पर अवस्थित इस क्षेत्र पर आने जाने के लिए सुगम साधना उपलब्ध है।

- महावीर जैन, कोटा

आदमी उच्चारण से नहीं, उच्च आचरण से श्रेष्ठ बनता है

पुण्योदय तीर्थ क्षेत्र दादाबाड़ी, कोटा

न्यायनिष्ठ की सम्पत्ति कभी कम नहीं होती। वह दूर तक पीढ़ी दर पीढ़ी चली जाती है (तिरुवल्लूर)

108 जिन प्रतिमाएं नवीन वेदी पर हुई विराजमान

अतिशय क्षेत्र बाड़ा पद्मपुरा दिगम्बर जैन मंदिर आचार्य वर्धमान सागर महाराज ससंघ सान्निध्य में हुआ भव्य आयोजन

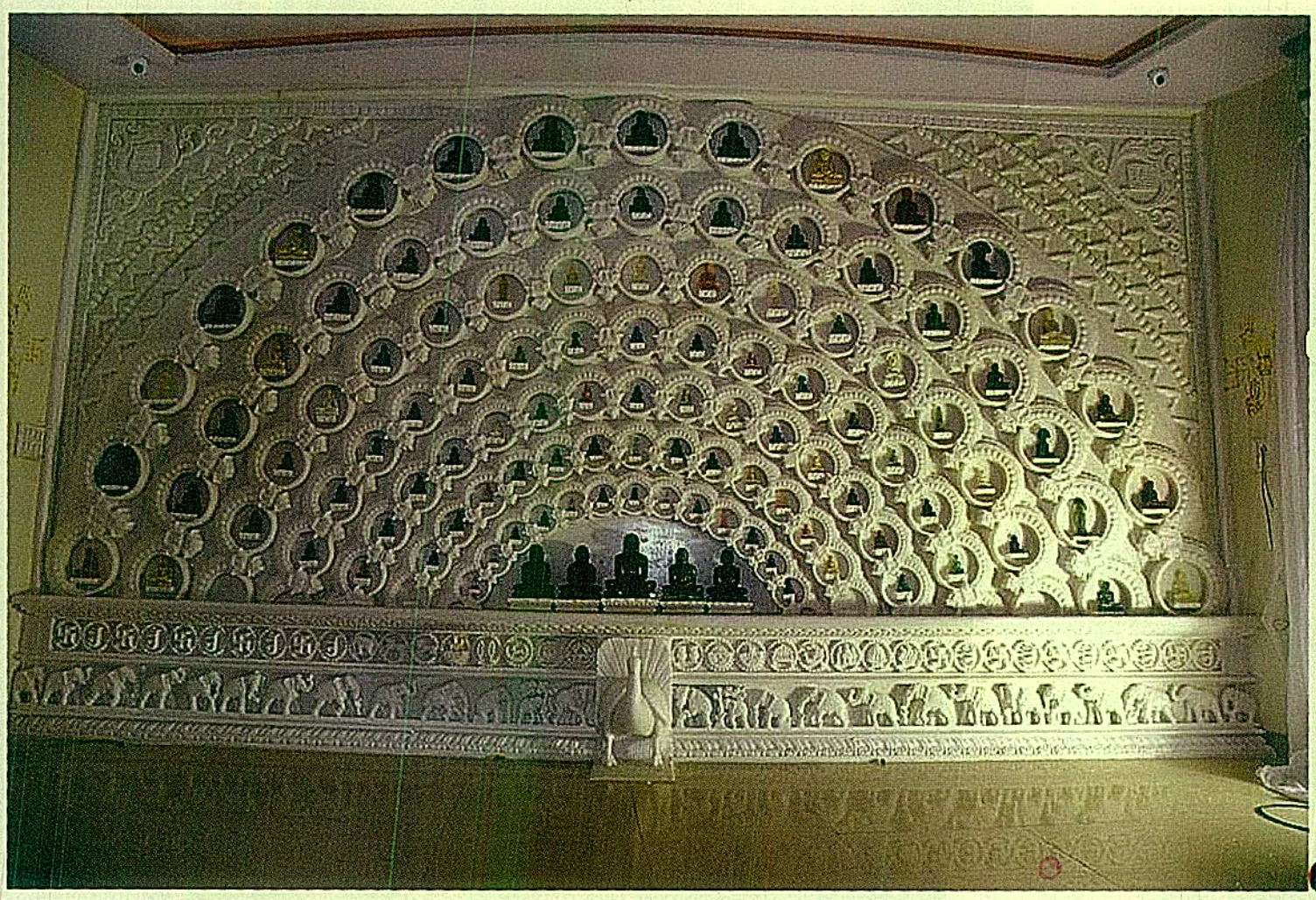

जयपुर । शहर के जैन अतिशय क्षेत्र बाड़ा पदमपुरा दिगम्बर जैन मंदिर में आयोजित तीन दिवसीय लघु पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अंतिम दिन शुक्रवार दिनांक 5 फरवरी, 2016 को प्रातः 6 बजे से श्रीजी के गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, मोक्ष कल्याणक की क्रियाओं का आयोजन आचार्यश्री वर्धमान सागर महाराज ससंघ, आचार्य शशांक सागर और आर्यिका गौरवमती माताजी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

क्षेत्र समिति मानद मंत्री श्री हेमंत सोगानी ने बताया कि बुधवार 3 फरवरी से 5 फरवरी तक क्षेत्र पर रत्नों की प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा का भव्य त्रिदिवसीय लघु पंचकल्याणक आयोजित किया गया जो क्षेत्र में वर्षों बाद आयोजित किया गया, जिसमें क्षेत्र और समाज को आचार्य वर्धमान सागरजी महाराज ससंघ सहित आचार्य शशांक सागर और आर्यिका गौरवमती माताजी ससंघ का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। शुक्रवार को लघु पंचकल्याणक के अंतिम दिन प्रातः 6 बजे से सभी क्रियाओं के साथ आचार्य श्री ने विधिनायक प्रतिमा पर एवं रत्नों की प्रतिमाओं पर अंकन्यास की क्रिया करते हुए गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, मोक्ष कल्याणक की क्रियाएं सम्पन्न हुई और जिसके उपरांक सभी 108 रत्नमयी प्रतिमाओं का कलशाभिषेक सम्पन्न कर ध्यान मंदिर में भव्य 108 रत्नों की प्रतिमाएं विराजमान की गई। इस पंचकल्याणक में सौधर्म इन्द्र महावीर जी पाटनी जयपुर वाले बने हैं। समारोह के अंतिम दिन अध्यक्ष सुधीर जैन, मुख्य संयोजक राजकुमार कोठ्यारी, संयुक्त मंत्री सुरेश काला, सदस्य कमल काला, जिनेन्द्र मोहन जैन, अभिषेक जैन बिट्टू आदि सहित सभी ने उपस्थित जनसमूह को आभार और धन्यवाद दिया और सम्मानित किया।

- हेमंत सोगानी, पदमपुरा क्षेत्र

किं न स्यात्साधुसंगमात् (उत्तरपुराण, 62, 350)। अर्थ साधु के समागम से क्या नहीं होता है। अर्थात सभी कार्य व मनोरम सफल हो जाते हैं।

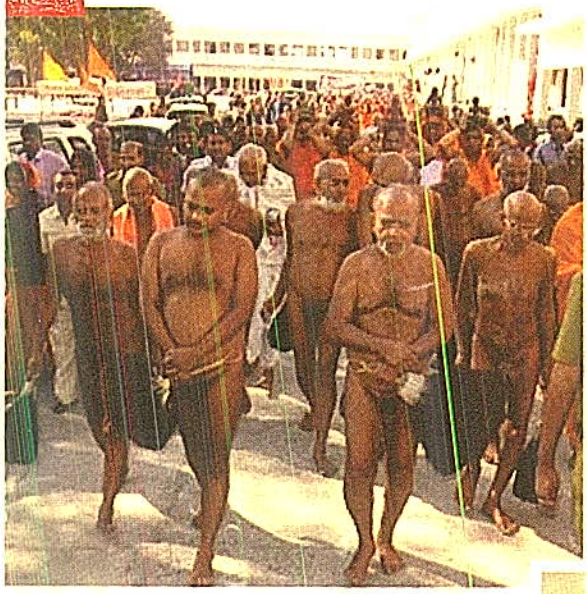

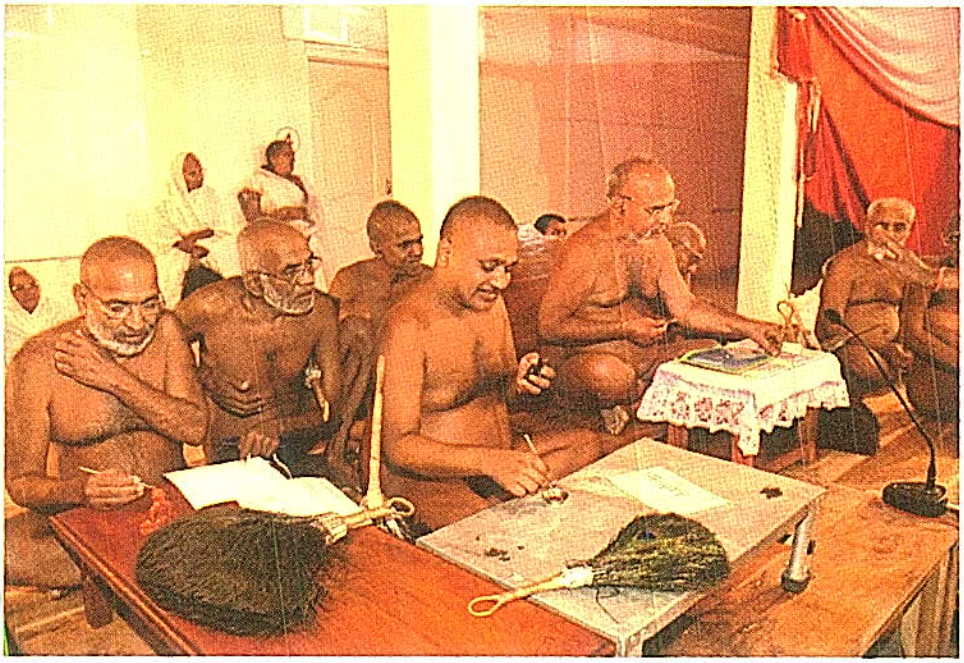

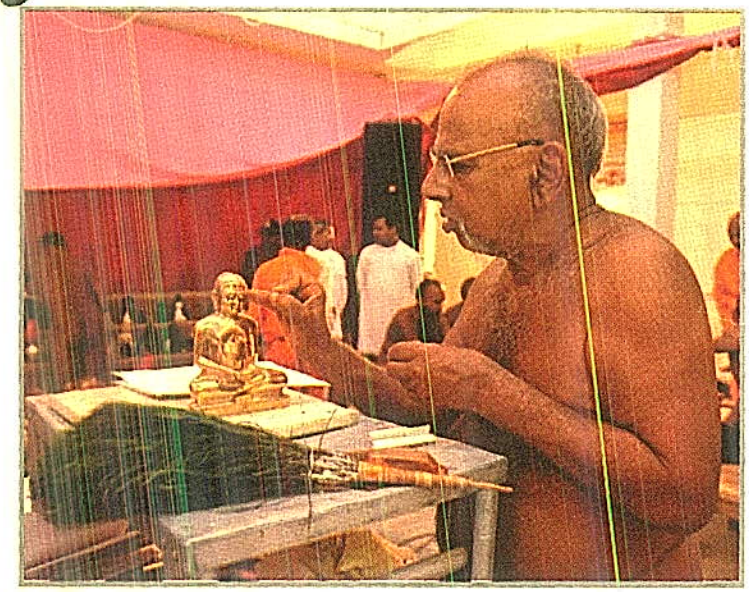

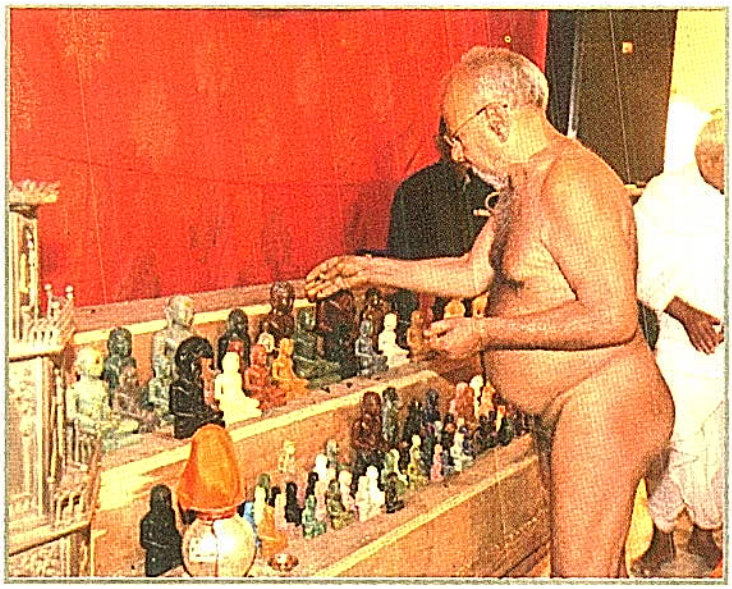

आत्मज्ञान रूप पवित्र तीर्थ है (पद्मनन्दि-पंचविंशतिका, चंद्रोदय अ 28)

श्री सम्मेदशिखर क्षेत्र को धार्मिक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किये जाने का निर्णय

दिनांक ७ फरवरी, २०१६ को पीएनसी हाऊस, वसंत विहार, नई दिल्ली में आयोजित सभा में चर्चा करते हुए पदाधिकारी परिषद के सदस्यगण.

दिनांक 7-8 फरवरी को दिल्ली में आयोजित भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद की बैठक में जैनियों के विश्वविख्यात तीर्थस्थल श्री सम्मेदशिखरजी, मधुबन (पारसनाथ पहाड़) क्षेत्र को धार्मिक पावन क्षेत्र घोषित करने हेतु तथा अन्य विकासशील योजनाओं के संबंध में चर्चा विचारणा कर निम्नलिखित निर्णय लिये गये -

1. पारसनाथ क्षेत्र को पवित्र, धार्मिक क्षेत्र घोषित करने का निर्णय:-

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन ने सभा को सम्बोधित करते हुए यह भावना व्यक्त की कि झारखंड सरकार श्री सम्मेदशिखरजी, पारसनाथ क्षेत्र के विकास के लिये अनेक योजनाएं क्रियान्वित करने जा रही है। झारखंड के मुख्यमंत्री मा.श्री रघुवरदासजी स्वयं मधुबन पधारे थे और उन्होंने क्षेत्र के विकास के लिये अनेक योजनाओं की घोषणा भी की है, जिसमें सरकार द्वारा पर्वत पर हेलीपेड बनाये जाने एवं पहाड़ को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने की योजना बनाई है। शिखरजी, मधुबन की इस पवित्र भूमि पर लाइट एवं सफाई आदि के बारे में उपायुक्त गिरडीह की अध्यक्षता में एक सभा मधुबन में हुई थी जिसमें उपायुक्त ने जैन समाज से अनेक सुझाव मांगे हैं, जिसमें सम्मेदशिखर पहाड़ एवं मधुबन ग्राम को अहिसा क्षेत्र घोषित करने के लिये उसकी परिधि निर्धारित किये जाने की जानकारी मांगी है।

इस प्रकार के अनेक विषयों पर समन्वय समिति की बैठक में चर्चा विचारण करके यह निर्णय लिया गया है कि पारसनाथ क्षेत्र को पवित्र धार्मिक क्षेत्र घोषित किया जाये जिससे संपूर्ण पारसनाथ पहाड़ जहां से पूरे विश्व को शांति, अहिंसा, सद्भाव का संदेश दिया जा सके तथा उस क्षेत्र में अवस्थित संपूर्ण पारसनाथ पहाड़ एवं सभी दिशाओं में 6 कि.मी. क्षेत्र की दूरी को अहिंसा क्षेत्र घोषित किया जाये जहां मांस, अंडे, मदिरा आदि के क्रय-विक्रय पर पूर्ण प्रतिबंध हो साथ ही डूमरी मोड़ से मधुबन एवं गिरडीह से मुख्य मार्ग पर तथा पालगंज मुख्य सड़क से पालगंज जैन मंदिर व पालगंज मुख्य सड़क के दोनों किनारों पर मांस, अंडे, मदिरा आदि मांसाहारी पदार्थों का क्रय-विक्रय न हो। इस आशय की अध्यादेश सरकार द्वारा जारी किया जाये।

2. पहाड़ पर बिजली की व्यवस्था :-

सोलर लैम्प लगाने से जीव जंतुओं की हिंसा होती है, अतएवं यह आवश्यक समझा गया कि सड़क के कम से कम पचास फीट की दूरी पर इसे लगाया जाये जिससे हिंसा न हो सके।

3. पहाड़ पर हेलिपेड बनाये जाने के विषय में

झारखंड सरकार द्वारा मधुबन एवं पहाड़ पर हेलिपेड बनाये जाने की घोषणा की गई है। सभा में यह निर्णय लिया गया कि किसी भी स्थिति में पहाड़ पर हेलिपेड न बनाया जाये, नीचे तलहटी में उपलब्ध जमीन पर इसका निर्माण कराया जाये। आपात कालीन स्थित से निपटने के लिये सरकार तलहटी से डाकबंगले तक सड़क का निर्माण करा सकती है, जिसका उपयोग केवल आपातकालीन स्थिति में ही किया जाये।

णिग्गंथ वीयराया जिणमग्गे एरिसा पडिया । अर्थ- जिन प्रतिमा निर्ग्रन्थ, वीतराग होती है (बोधपाहुड़, गा.10)

दिनांक 8 फरवरी, 2016 को श्री पंकज जैन के निवासस्थान- 266, सूरजमल विहार में आयोजित सभा में विशेष रुप से उपस्थित कमेटी के परमसंरक्षक, श्रीमान् नरेशकुमारजी सेठी- जयपुर, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीरकुमार जैन– कटनी, श्री स्वदेशभूषण जैन- दिल्ली, श्री एम.पी. अजमेरा– रांची, महासभा के प्रतिनिधि श्री पवनकुमार जैन, राष्ट्रीय मंत्री- श्री खुशाल जैन-मुंबई, प्रेमचंद जैन-कटनी, श्री सुनिल जैन-दिल्ली, श्री अभिनव जैन, एडवोकेट-दिल्ली, श्री अनिल जैन-दिल्ली, श्री मनिंद्र जैन-दिल्ली, साहू अखलेश जैन-दिल्ली, श्री वी.एम. दोशी-मुंबई, श्री पंकज जैन-दिल्ली, श्री धरणेंद्र जैन-दिल्ली, श्री चक्रेश जैन-दिल्ली, श्री सतिशचंद्र जैन-दिल्ली, श्री नरेशचंद जैन-दिल्ली, श्री श्रीकिशोर जैन-दिल्ली भी उपस्थित थे।

4. धार्मिक तीर्थ विकास प्रधिकार :-

राज्य सरकार का यह निर्णय कि पारसनाथ क्षेत्र के विकास हेतु इस प्राधिकार का गठन किया जाये। यह निर्णय अत्यंत ही स्वागत योग्य है। चर्चा के पश्चात यह निर्णय लिया गया कि इसका नामकरण पारसनाथ धार्मिक पर्यटन स्थल रखा जाये और उसी के अनुरूप तिरुपति बालाजी एवं वैष्णवदेवी धार्मिक स्थलों की तरह इस क्षेत्र का विकास किया जाये।

उक्त संदर्भ में एक ज्ञापन तैयार करने का दायित्व समन्वय समिति के संयोजक श्री एम.पी.अजमेरा को सौंपा गया और उनसे यह निवेदन किया गया कि हमारे जो मुकदमे शिखरजी को लेकर सुप्रीम कोर्ट में चल रहे हैं उन्हें ध्यान में रखते हुए ज्ञापन तैयार किया जाये

सभी तीर्थ हमें आत्मोन्नति की प्रेरणा देते हैं।

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय महामंत्री एवं पारस चॅनल के चेअरमॅन श्री पंकज जैन, दिल्ली यमुनापार दिगंबर जैन समाज के निर्विरोध अध्यक्ष चुने गये इस समाज के अंतर्गत करीब ६५-७० दिगंबर जैन मंदिर है।

दि. ८ फरवरी, २०१६ को आयोजित यमुनापार दिगंबर जैन समाज के प्रतिनिधियों की सभा मे अध्यक्ष श्री राकेश जैन, श्री पंकज जैन को नये अध्यक्ष चुने जाने का प्रस्ताव रखा जिसकी अनुमोदना करतल ध्वनीसे करते हुए श्री पंकज जैन को अध्यक्ष के रुपमें मनोनित किया गया। इस अवसर पर करीब १०० से अधिक प्रतिनिधि सभा में उपस्थित थे।

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

साहित्य-सत्कार

परम जिनधर्म प्रभावक, महातपो मार्तण्ड, ऋषिराज मुनिपुङ्गव श्री सुधासागर जी महाराज के महनीय व्यक्तित्व, उदार कृतित्व, प्रभावी श्रमणचर्या एवं प्रेरक प्रवचनों से सम्पूर्ण जनमानस प्रभावित हो रहा है। आज वे श्रमण संस्कृति के आदर्श सन्त, तीर्थ संस्कृति के संरक्षक, जीर्णोद्धारक एवं पुरस्कर्ता, जिनवाणी निष्ठ साहित्य साधक, गुरुभक्त आदि विशेषताओं से सम्पन्न होकर स्व-परकल्याण का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। उन्हीं के प्रेरक जीवन से प्रभावित होकर ख्याति प्राप्त अनेकान्त मनीषी प्रो. (डॉ.) रमेशचन्द जैन, डी.लिट्., निदेशक-राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं संशोधन संस्थान, श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) ने 'मुनिपुङ्गव श्री सुधासागर : व्यक्तित्व, विचार एवं प्रभाव' कृति का तीन खण्डों में लेखन/सम्पादन किया है। प्रथम खण्ड-व्यक्तित्व का प्रकाशन भगवान् ऋषभदेव ग्रन्थमाला, सांगानेर-जयपुर (राज.) से हो चुका है। 366 पृष्ठीय इस ग्रन्थ में मुनिपुङ्गव श्री सुधासागर जी महाराज के महनीय व्यक्तित्व को प्रतिपादित किया गया है। सुधी पाठकगण इससे जीवनोत्थान की प्रेरणा पा सकेंगे।

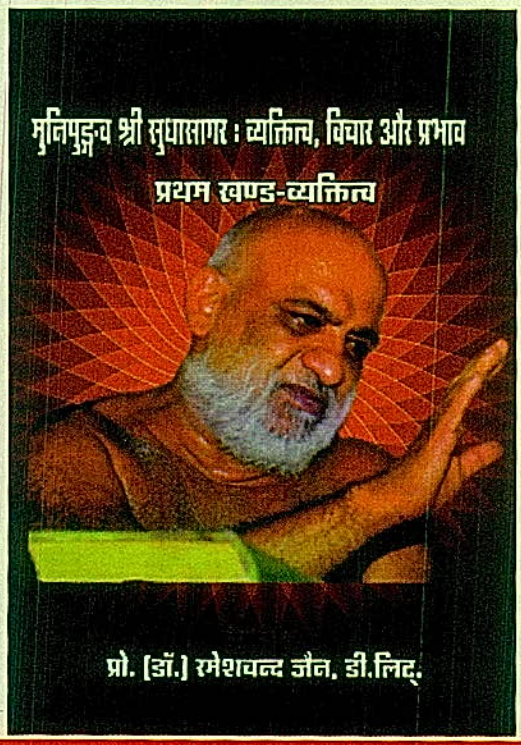

मुनिपुङ्गव श्री सुधासागर जी महाराज की मंगलवाणी एवं प्रखर कार्यशैली तथा सामाजिक प्रबोधन को भी इस कृति से जाना जा सकता है। शीघ्र ही अन्य दो खण्ड और प्रकाशित होंगे। इस ग्रन्थ का मूल्य-200रु. है। यह ग्रन्थ भगवान् ऋषभदेव ग्रन्थमाला, संघी जी मन्दिर, सांगानेर-जयपुर (राज.) फोन नं. 0141-2731952 से प्राप्त किया जा सकता है।

*कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती'
बुरहानपुर (म.प्र.)

दो बातें इंसान को अपनों से दूर कर देती हैं, एक उसका 'अहम्' और दूसरा उसका 'वहम्'

प्राचीन तीर्थ अतिशय क्षेत्र चन्द्रवाड़

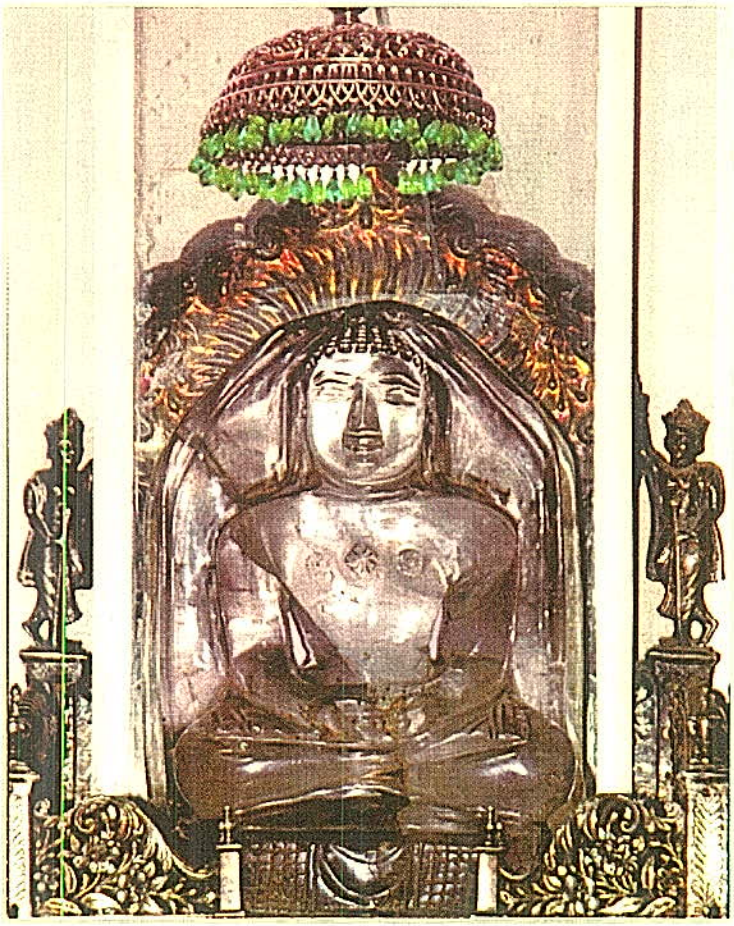

मेरा नाम चंदवार है, शौरीपुर के उत्तर की ओर फिरोजाबाद के दक्षिण में यमुना के किनारे पर बसा हुआ मैं वही चंद्रवार हूं जहां किसी समय भरतपाल, अभयपाल, जाहड़ श्री बल्लाल आदि राजा आये और अपनी शान-शौकत दिखाकर चले गये। उनके समय में यहां अनेक जैन श्रावक, राजा, सेठ और प्रधानमंत्री सरीखे उच्च पदों पर आसीन रहे। अब से मैं अनेक बार बसा और उजड़ा। उजड़ा और फिर बसा। बड़े-बड़े मंदिर, महल और मकान यहां बने और मिट्टी में मिल गये।

आज मुझे यहां से बोलने की जरुरत न पड़ती, यदि मैं यह अनुभव न करता कि मनुष्य अपनी परम्परा, अपनी जाति और अपने इतिहास के अनुभवों को सुरक्षित नहीं रख सकता। न सही, आज मैं ही मनुष्यों की बोली में तुम लोगों से अपनी कहानी कहने आया हूं।

विक्रम संवत 1052 में राजा चन्द्रपाल जैन के नाम पर मेरा नामकरण हुआ। चन्द्रपाल एक अत्यंत ही धर्मात्मा, उदार औरजिनभक्त राजा था। वर्ष भर उनके यहां मूर्तिकला विशारद कारीगर रहते थे, जिनका काम केवल जैन मूर्तियों का निर्माण ही करना था। वर्ष के अंत में उन मूर्तियों की प्रतिष्ठायें करा दी जाती थीं। अब तक 51 प्रतिष्ठाओं से मेरी रज का कण कण पवित्र हो चुका है। जहां आज आप मेरे खंडित अवशेष देखते हैं, वहां किसी समय गगनचुम्बी अट्टालिकाएं थीं। धन, जन और धर्म से परिपूर्ण मेरावह शरीर जहां जर्जरित होकर आज बेसुध पड़ा कराह रहा है लेकिन कोई आज मेरी ओर देखने वाला नहीं है।

हां तो राजा चन्द्रपाल बड़ा वीर और पराक्रमी राजा था। उसने सं 1053 में स्वयं प्रतिष्ठा महोत्सव कराया था। उसके पास पारदर्शी स्फटिक मणि की दो मूर्तियां थी। एक श्री चन्द्रप्रभ भगवान की डेढ़ फीट ऊंची पद्मासन मूर्ति और दूसरी श्री विमलनाथ भगवान की मूर्ति। राजा प्रतिदिन मंदिर पहुंच कर श्रावक भक्तों के साथ जिन पूजा का पुण्य प्रसाद प्राप्त करता था। आज उनमें से विमलनाथ भगवान की मूर्ति का तो कुछ भी पता नहीं चलता लेकिन दूसरी चन्द्रप्रभ भगवान की वह सातिशय प्रतिमा आज भी फिरोजाबाद के एक प्रसिद्ध जैन मंदिर में स्थापित है। यह मूर्ति वहां कैसे पहुंची इसका भी एक प्रेरक अध्याय है।

जब मुहम्मद गौरी ने विजयोन्माद में भक्त पर आक्रमण किया तथा राजा चन्द्रपाल उससे वीरतापूर्वक लड़ा था। लेकिन उसके मुट्ठी भर सिपाही मुसलमानों की उस अपरिमित सेना से कब तक लड़ सकते थे। मुझे खूब याद है कि युद्ध के उन दिनों में एक रात को अपने महल में बैठा हुआ राजा भविष्य के मन्सूबे बना रहा था। उसे चिन्ता अपनी मृत्यु की नहीं थी, लेकिन असंख्य जिन प्रतिमाओं की सुरक्षा के लिये वह बैचेन था। सबसे अधिक छटपटाहट भगवान चन्द्रप्रभ की अमूल्य प्रतिमा के लिये थी। अंत में उसने एक दृढ़ निश्चय किया और पौ फटते ही उस प्रतिमा के साथ रानी व राजकुमार को नाव में बैठाकर यमुना मार्ग से बाहर भेज दिया। बाद में नाव के पलट जाने से वे सब अथाह जल में डूब गये। राजा ने भी लड़ते हुए युद्ध में वीरगति प्राप्त की।

राजा का देव लोक होने पर गौरी ने मेरा सब कुछ लूट लिया। मेरी श्री समृद्धि देखते ही देखते मुझसे छीन ली गई। अनेक मूर्तियों का अनादर उसके दुष्ट सिपाहियों ने किया। खून के आंसू पीकर मुझे रह जाना पड़ा। भगवान चन्द्रप्रभ मेरे आराध्य पहले ही मुझसे अलग हो गये थे और तब सेही मैं अपने दुर्भाग्य पर नौ-नौ आंसू बहा रहा हूं।

कालान्तर में मैंने देखा कि यमुना नदी के किनारे एक भक्त आया और फूलों की बरसा करने लगा। फूल भी अथाह जल में उठने वाली लहरों के साथ-साथ बढ़ते रहे और कुछ ही देर में बीच भंवर में पहुंच कर एका एक स्थिर हो गये। यह वही स्थान था जहां नाव पलट गई थी। फूलों के रुकते ही भक्त निःसंकोच होकर पानी में उतर गया। यह देखकर मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि जहां घड़ीभर पहले हाथी डुबान पानी था, अब वहां घुटनों तक ही जल रह गया था। विस्मय से मेरा कलेजा धक-धक करने लगा। यह प्रभु की कैसी माया है। भक्त ने झुककर तल में से कुछ ढूंढने की चेष्टा की और अन्त में मुझे उसके हाथों में वही भगवान चन्द्रप्रभ की स्फटिकमणि वाली प्रतिमा दिखाई दी। वह उस मूर्ति को रथ में विराजमान कर उत्तर की ओर ले गया। आज वही मूर्ति फिरोजाबाद के

आत्मज्ञान रूप पवित्र तीर्थ है (पद्मनन्दि-पंचविंशतिका, चंद्रोदय अ 28)

श्री चन्द्रप्रभ मन्दिर की शोभा है।

मैं इस मायावी घटना से हतप्रभ था। एक दिन यहां कुछ अन्वेषक पुरातत्व का अनुसंधान करने आये। उनकी बातचीत से मुझे मालूम हुआ कि भगवान चन्द्रप्रभ के भक्त ऐसे किसी शासन देवता ने फिरोजाबाद के एक जैन श्रावक को यह स्वप्न दिया था ''अरे यमुना में पड़े हुए भगवान चन्द्रप्रभ के इस मनोहर बिम्ब को निकाल'। भक्त हड़बड़ाकर उठ बैठा, यमुना के इस किनारे तक आया लेकिन जल के प्रबल वेग और अथाह गहराई देखकर ठिठक गया। दिन भर वह स्वप्न का रहस्य जानने छटपटाता रहा। रात को पुनः उसने स्वप्न में किसी को कहते हुए सुना 'अरे भोले तू डर गया। एक टोकरी में फूल लेकर पुनः वहां जा। जिस स्थान पर फूल स्थिर हो जाये वहीं प्रभु का अस्तित्व समझ कर तू जल में प्रवेश कर उन्हें निकाल ले'। भक्त सवेरा होने पर पुनः वहां गया और स्वप्न के अनुसार उसने ठीक वैसा ही किया। इसके बाद की बात में पहले ही कह चुका हूं। उस श्रावक के पुण्य प्रभाव से यमुना का जल कितना कम रह गया था। अन्वेषकों के मुख से उस रहस्य का भेद पा लेने पर मेरा आश्चर्य और भी बढ़ गया।

प्राचीन अतिशय क्षेत्र चन्द्रवाड़ के 1100 वर्ष प्राचीन मूलनायक भगवान आदिनाथ

आज भी चन्द्रप्रभ की उस सातिशय, मनोहर मंजुल और नयनाभिराम मूर्ति के कारण ही फिरोजाबाद की गणना एक अतिशय क्षेत्र के रूप में जानी जाती है। इस मनोज्ञ प्रतिमा के दर्शन करने के लिये भारत के कोने कोने से यात्री आया करते हैं। मेरा ऐसा भाग्य कहां कि मैं भी उस वीतराग स्वरूप की झलक एक बार फिर पा सकूं। यह मूर्ति चतुर्थकालीन सातिशय मूर्ति है। राजा चन्द्रपाल को यह मूर्ति परम्परा से प्राप्त हुई थी। भारतभर मेंइस प्रकार की कोई दूसरी मूर्ति नहीं है। आज मैं उसी मूर्ति के नाम के सहारे अपने अवशेष जीवन की घड़ियां गिन रहा हूं।

चन्द्रवार, चंद्रवाड अथवा चन्द्रपाट नाम का एक प्रसिद्ध नगर यमुना तट पर आगरा के समीप, फिरोजाबाद के दक्षिण में चार मील की दूरी पर बसा हुआ था। जो आज प्राचीन ध्वंसावशेषों या खण्डहरों के रूप में दृष्टिगोचर हो रहा है। वह अतीत की यह झांकी प्रस्तुत कर रहा है कि हम भी किसी समय सम्पन्न और समुन्नत थे, किन्तु मुगल शासनकाल में उसकी यह वृद्धि विनष्ट हो गई, और वह खंडहरों में परिवर्तित हो गया। उसके प्राचीन खंडहर दर्शकों को अपने अतीत गौरव की कहानी मौनपूर्वक सुनाते हैं और अपनी अवनत दशा का यह वीभत्स दृश्य भी अंकित करते हैं, जिससे दर्शकों के हृदयपट पर विषाद की एक हल्की सी रेखा खिंच जाती है।

हिंदी विश्वकोष भाग 7 पृ.171 में लिखा है कि चन्द्रपाल इटावा अंचल के राजा का नाम था। कहा जाता है कि राजा चन्द्रपाल ने राज्य प्राप्ति के अनन्तर चन्द्रवाड़ में सं.1053 में एक प्रतिष्ठा कराई थी। इनके द्वारा प्रतिष्ठित स्फटिकमणि की एक मूर्ति जो एक फुट की अवगाहना लिये हुए आठवें तीर्थंकर की थी और जो यमुना नदी के मध्यजलधारा में से निकालकर फिरोजाबाद में उत्सव सहित लाई गई थी वह वहां के एक पंचायती मंदिर में विराजमान है। मूर्ति बड़ी ही सातिशय और शांत मुद्रा में स्थित है।

विक्रम की 13वीं शताब्दी (वि.सं.1230) में चन्द्रवाड़ निवासी माथुरवंशी साहू नारायण और उनकी धर्मपत्नी रूपिणीदेवी ने जो देव-शास्त्र-गुरु भक्त थी, संसारवर्धक कथाओं को सुनने में विरक्त थी, उसने श्रुत पंचमी के उपवास संबंधी फल को प्रकट करने वाले भविष्यदत्तकुमार के जीवन परिश्रम को व्यक्त करनेवाली भविष्य दत्त कथा श्रीधर कवि से बनवाई थी। इस ग्रन्थ में राजादिक के नाम का कोई उल्लेख नहीं है इसलिये यह निश्चय करना कठिन है कि वहां उस समय किसका राज्य था पर उस समय चन्द्रवाड़ में जैनियों का निवास था यह निश्चित है।

उसके बाद सन् 1194 (वि.सं.1251) में शहाबुद्दीन गौरी जब कन्नौज की ओर जा रहा था तब उसकी रास्ते में चन्द्रवाड़ के जयचन्द गहरवार से मुठभेड़ हो गई। जिसमें राजा जयचन्द जो हाथी के होदे पर बैठे हुए थे शत्रु का तीर लगने से मृत्यु हो गई थी। मुहम्मद गौरी जयचन्द को पराजित कर 1400 ऊंट पर लूटवाट का माल भरवाकर ले गया था।

चौहानवंशी राजाओं के शासनकाल में चन्द्रवाड़ एक अच्छा श्रीसम्पन्न और महत्वपूर्ण शहर था। यह जन धन से समृद्ध था। इसकी समृद्धि का एक कारण और भी था और वह यह कि चन्द्रवाड़ यमुना नदी के किनारे बसा हुआ था जिससे वह व्यापार का केन्द्र बना हुआ था। नौकाओं द्वारा माल का आयात निर्यात होता था। सैकड़ों मल्हार वहां पर काम किया करते थे। आने जाने वाले लोगों को यमुना अवश्य पार करनी पड़ती थी जिससे उन्हें अच्छी आय हो जाया करती थी। इसके कारण भी अनेक मुसलमान शासकों के दिल में चन्द्रवाड़ को अधिग्रहण करने की इच्छा उत्पन्न होती थी। इन चौहानवंशी राजाओं के राज्यकाल में चन्द्रवाड़ जैन संस्कृति का प्रमुख केंद्र बना हुआ था। वहां अनेक उन्नत शिखर वाले जैन मंदिर थे जो ध्वजाओं से अलंकृत थे। इन

दान, पूजा, तीर्थाटन आदि यदि सम्यग्ज्ञान से सुशोभित है तो वे मुक्ति के कारण हैं (उत्तर पुराण)

आज भी मिल रहे हैं जैन धर्म के अवशेष

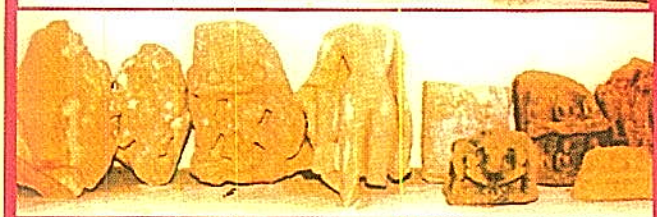

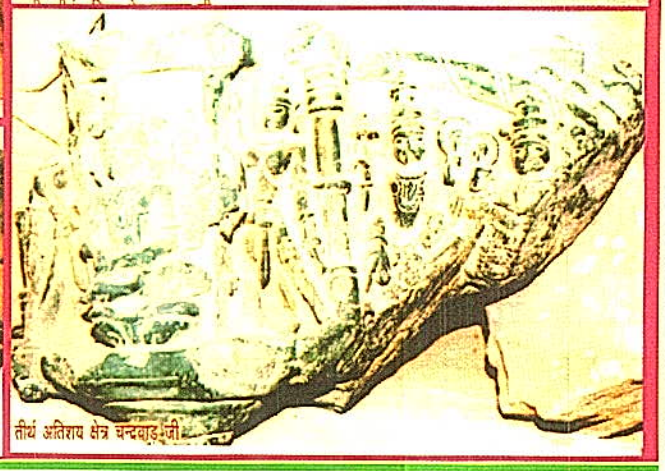

तीर्थ अतिशय क्षेत्र चन्द्रवाड़जी

भूगर्भ से प्राप्त प्राचीन ब्रिटिश कालीन जैन मुद्रायें

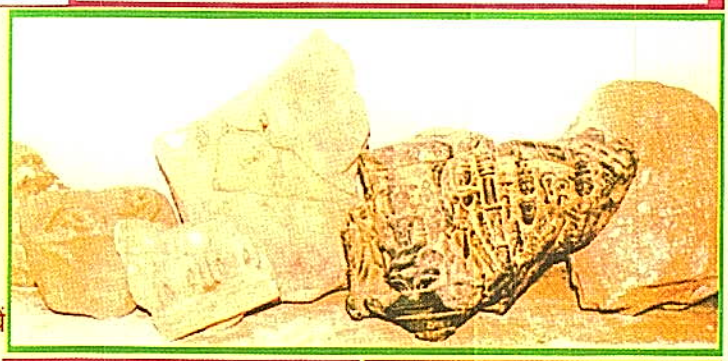

भूगर्भ से प्राप्त प्राचीन शिलालेख आदि नगरि चन्द्रवाणे जिनायणये राज्ये

भूगर्भ से प्राप्त प्राचीन खण्डित प्रतिमा

भूगर्भ से प्राप्त प्राचीन प्रतिमा

धम्मो दयाविसुद्धो (आ.कुन्द-कुन्द : बोधपाहुड, गा.25) । अर्थ- शुद्ध भाव से युक्त दयाधर्म हैं।

राजाओं के राज्य मंत्री भी जैन कुलों से थे, जो धर्मनिष्ठ सप्तव्यसनरहित तथा उदार थे। वे जहां जैन धर्म के प्रतिपालक थे वहां राजनीति में चतुर भी थे। चन्द्रवाड़, रपरी, असाईखेड़ा, भौगांव करहल, मैनपुरी, इटावा ये सब चौहान वंश के राज्य स्थल थे।

चन्द्रवाड़ में जैनियों की अच्छी संख्या थी, मंदिरों का समूह था, उस समय की समृद्धि का अनुमान करना कठिन है। कहा जाता है कि वहां 51 पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएं हुई थी। वहां 14वीं 15वीं शताब्दी में भी मंदिर बने और प्रतिष्ठाएं हुई। संवत 1454 की एक प्रतिष्ठित मूर्ति दिल्ली के सेठ कूंचा में बड़े मंदिर में विराजमान है जो धातु की चौबीसी प्रतिमा है, जो चौहानवंशी राजा अभय चन्द्रदेव के सुपुत्र राजा जयचन्द के राज्यकाल में प्रतिष्ठित हुई थी, जिसकी प्रतिष्ठा काष्ठासंघ माथुरान्वय के आचार्य अनन्तकीर्ति के पट्टधर क्षेमकीर्ति की आम्नाय में पद्मावती पुरावालान्वय में साहु मण्डल के पांच पुत्रों ने कर्मक्षयार्थ कराई थी।

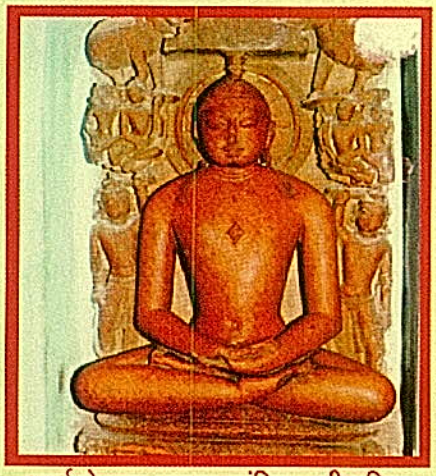

भूगर्भ से प्राप्त भगवान शांतिनाथ की प्रतिमा

भूगर्भ से प्राप्त भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा

1600 वर्ष प्राचीन भगवान पारसनाथ की प्रतिमा

भूगर्भ से प्राप्त अति प्राचीन भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा

इसी तरह विक्रम की 15वीं शताब्दी के अंतिम चरण में दिल्ली निवासी साहु तोसऊ के प्रथम पुत्र साहु नेमिदास ने जो चन्द्रवाड़ के तात्कालिक राजा रूद्रप्रताप से सम्मानित थे अनेक विद्रुम आदि रत्नों की अगणित मूर्तियां बनवाकर प्रतिष्ठित की थी और सुंदर सुंदर मंदिर बनवाये थे तथा रईधु कवि से पुण्याश्रव कथा ग्रन्थ भी बनवाया था।

संवत् 1454 मेंदिल्ली पट्ट के भट्टारक प्रभाचन्द्र के शिष्य पंडित धनपाल ने चन्द्रवाड़ के राजा के प्रधानमंत्री साहु वासाधर की प्रेरणा से बाहुबलि चरित्र वहीं बना कर संपूर्ण किया था। साहु वासाधर ने मंदिर भी बनवाया था तथा प्रतिष्ठा भी करवाई थी।

इस तरह चन्द्रवाड़ का इतिहास बहुत कुछ प्रकाश में आता है तथा उसके अतीत वैभव की स्मृतियां हृदय में अंकित हो जाती है।

वर्तमान में चन्द्रवाड़ खंडहरों में परिवर्तित हो गया है। अब चूंकि व्यापार रेल, मोटरों से होता है, इससे भी इसकी समृद्धि को धक्का लगा है। वहां एक ही मंदिर अभी अवशिष्ट रह गया है, वह भी टूटा फूटा, परन्तु उसका जीर्णोद्धार फिरोजाबाद की समाज ने करा दिया है। वहां की पाषाण आदि की कुछ मूर्तियां फिरोजाबाद के मंदिरों में विराजमान हैं। चन्द्रवाड़ की सबसे प्रसिद्ध और अतिशय युक्त स्फटिक भगवान चन्द्रप्रभ की प्रतिमा जो यमुना नदी के मध्यान्तर से प्राप्त हुई थी और जो बड़े भारी उत्सव के साथ वहां ल. विराजमान की गई थी। उस सातिशय मूर्ति के दर्शन के लिये जनता उत्सुक रहती है। वहां का किला भी खण्डहरों में परिणित हो गया है।

इन सभी कथनों से चन्द्रवाड़ की महत्ता का अच्छा परिचय मिल जाता है। आज वह एक अतिशय बना हुआ है। हर वर्ष वहां एक वार्षिक मेला भी लगता है, इसी समय चन्द्रवाड़ में फिरोजाबाद से मूर्ति ले जाई जाती है तथा मेले के पश्चात पुनः फिरोजाबाद में विराजमान की जाती है। यदि चन्द्रवाड़ में उत्खनन कराया जाये तो वहां जैन संस्कृति की बहुत सी चीजें मिल सकती हैं। प्रत्येक जैनी को वहां दर्शन के लिये जाना चाहिये। यात्रा से फिरोजाबाद के मंदिरों के दर्शन तो होंगे ही साथ ही जैन नगर में सेठ छिदामीलालजी द्वारा निर्मित संगमरमर के भव्य मंदिर और मानस्तम्भ के भी दर्शन होंगे। आशा है यात्री गण इस ओर विशेष ध्यान देंगे।

साभार-चन्द्रप्रभ वैभव से

णिग्गंथ वीयराया जिणमग्गे एरिसा पडिया। अर्थ- जिन प्रतिमा निर्ग्रन्थ, वीतराग होती है (बोधपाहुड़, गा.10)

थुबोनजी क्षेत्र पर आयोजित विमान महोत्सव का दृश्य

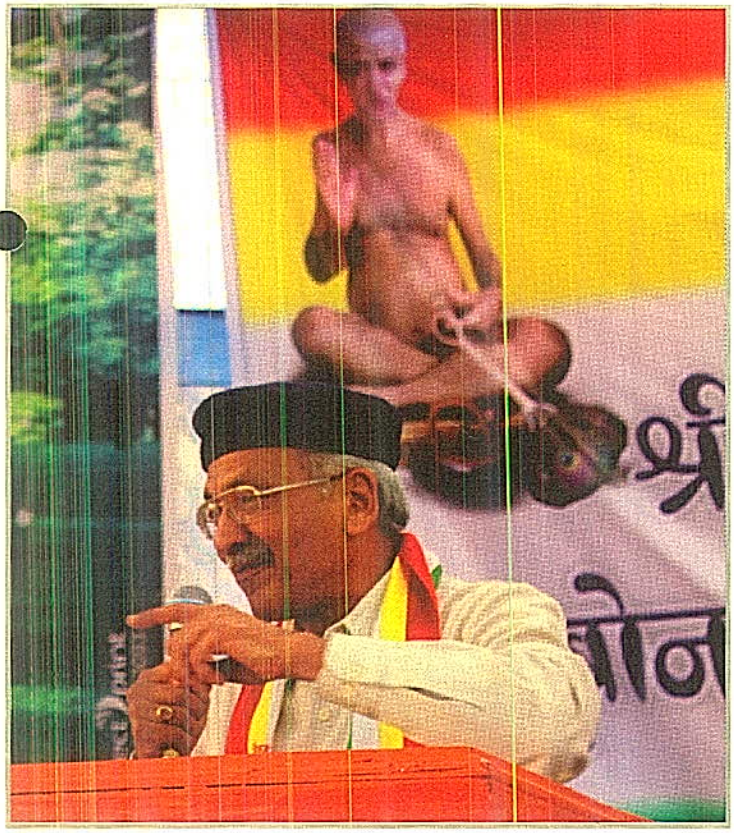

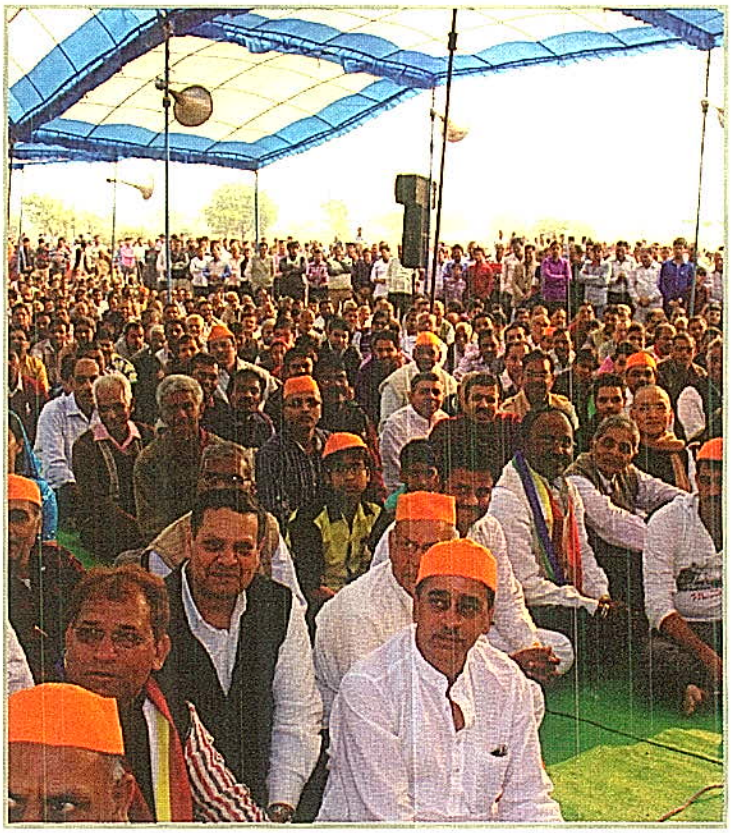

जैन धर्म में तपतीर्थ, ज्ञानतीर्थ, संयमतीर्थ आदि कहे गये हैं

प्राचीन क्षेत्र ढिंढोरी, जिला शहपुरा

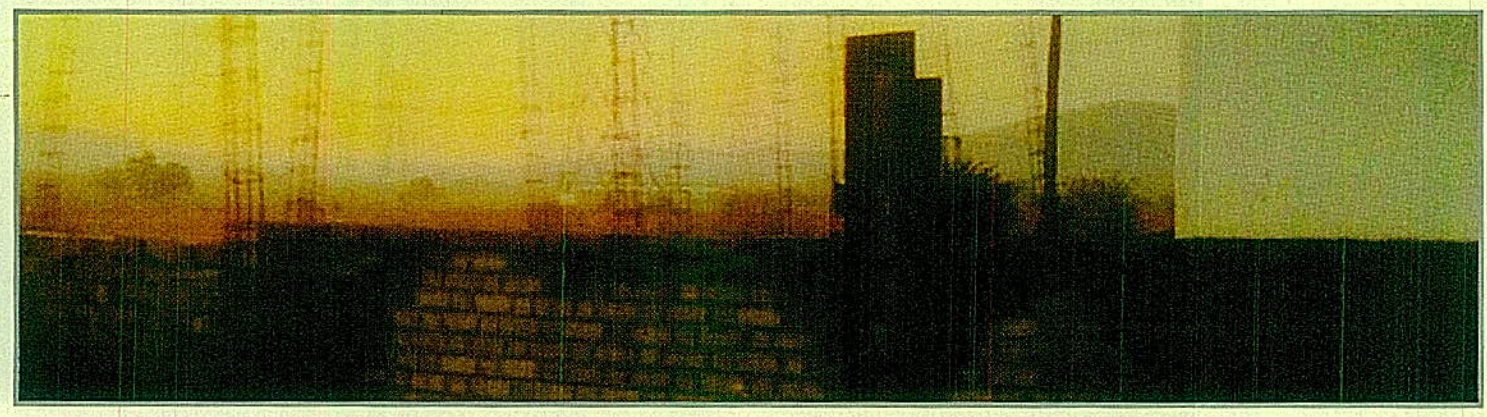

पैसे से सुख कभी खरीदा नहीं जाता, और दुःख का कोई खरीदार नहीं होता

प्राचीन क्षेत्र ढिंढोरी, जिला शहपुरा

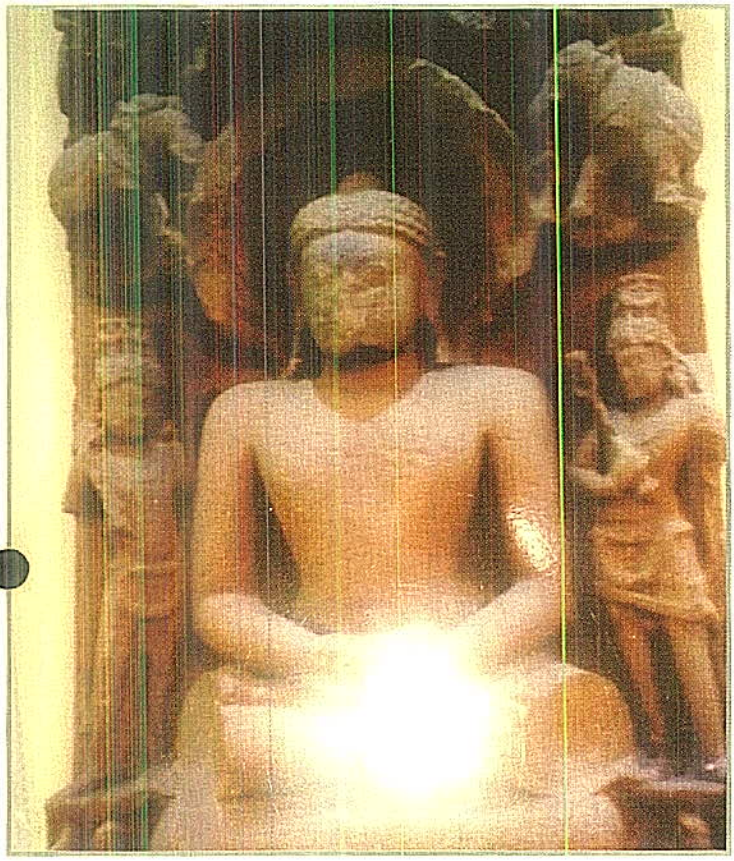

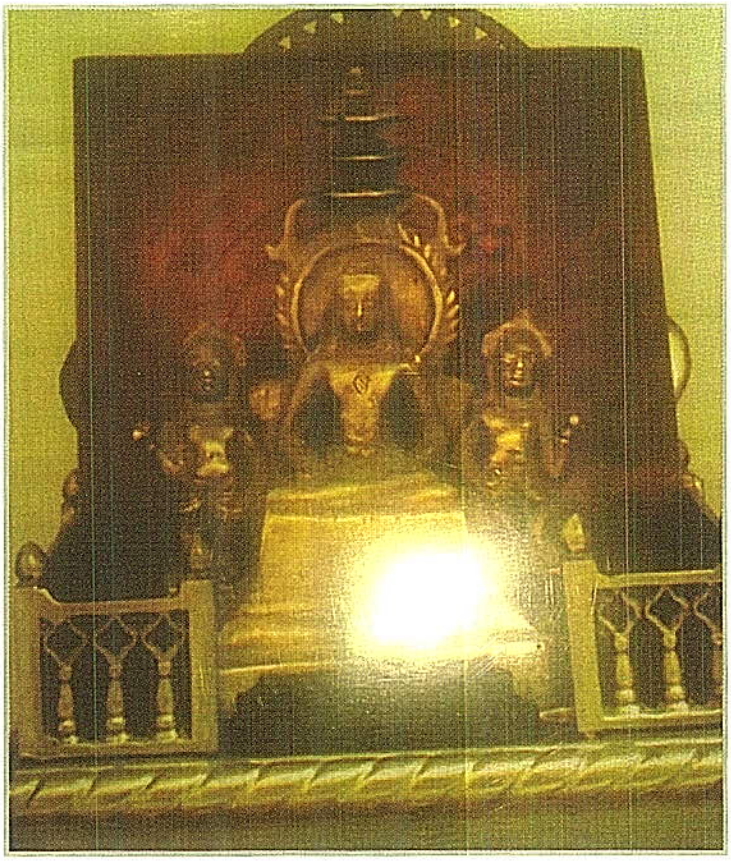

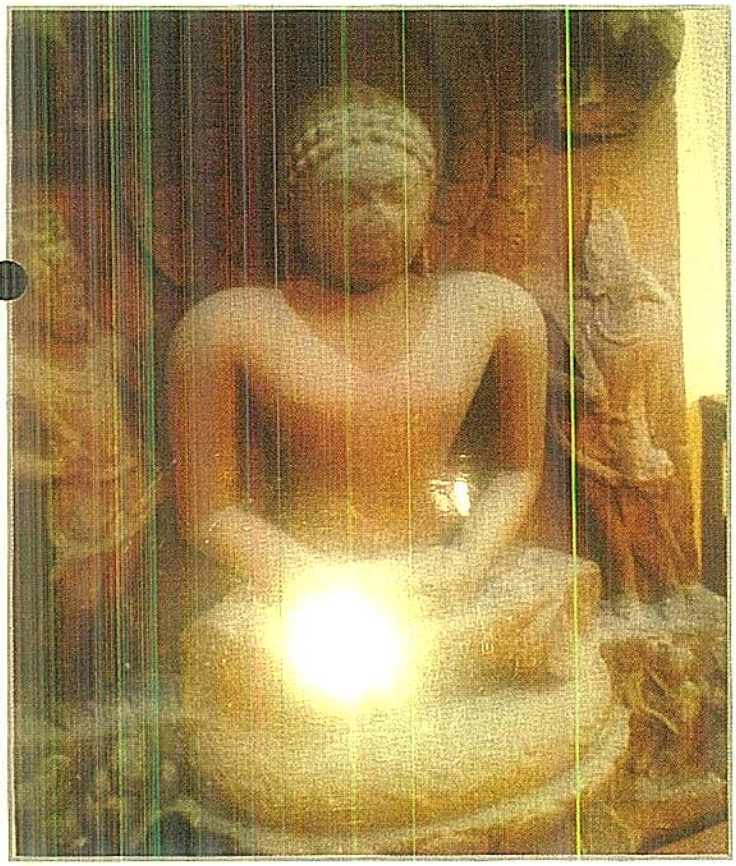

संतो हि हितभाषिणः (उत्तरपुराण, पर्व 70, श्लोक 325) । अर्थ- साधु-संत आत्महित का उपदेश देते हैं ।

पशु क्रूरता कानून कितना न्याय संगत?

- डॉ. चंचलमल चोरडिया, जोधपुर (राज.)

आज चारों तरफ हिंसा, आतंक, लूट, क्रूरता, निर्दयता एवं बदले की भावना तीव्र गति से क्यों पनप रही है? सरकार के सारे प्रयास अपेक्षित परिणाम लाने में क्यों असफल हो रहे हैं? जिस पर पूर्वाग्रह छोड़ सम्यक् चिंतन की आवश्यकता है?

पशु क्रूरता निवारण कानून की विसंगतियाँ -

सरकार पशुओं के कल्याण हेतु जनचेतना जागृत करने के लिए प्रतिवर्ष 14 जनवरी से 29 जनवरी तक राष्ट्रीय स्तर पर पशु कल्याण पखवाड़ा मनाती है। पशु क्रूरता निवारण समितियाँ इन दिनों में बच्चों की रैलियों, भाषण प्रतियोगिताओं, निबंध प्रतियोगिताओं का आयोजन कर अपना कर्तव्य पूर्ण समझ रही है। पशु कल्याण विभाग (Animal Welfare Board) बनी हुई है, जिसके अंतर्गत पशु क्रूरता निवारण समितियां कार्यरत हैं। अहिंसा प्रेमियों द्वारा पशुओं के संरक्षण हेतु सैकड़ों स्वयंसेवी संस्थायें संलग्न हैं। फिर भी दिन-प्रतिदिन भारत में पशुक्रूरता तीव्र गति से बढ़ रही है। **भारत में पशुक्रूरता निवारण कानून बना हुआ है जिसके अंतर्गत पशुओं पर हो रहे अत्याचारों, क्रूरता, बर्बरता, निर्दयता करने वालों पर दण्ड का प्रावधान है। परन्तु इन मूक, बेबस, बेसहारा प्राणियों को उन कानूनों का लाभ नहीं मिल रहा है। कानून के अंतर्गत पशुओं को प्रताड़ित करना, उनके साथ क्रूरता करना, उन पर अधिक बोझ लादना, ट्रकों में ठूंस-ठूंसकर भरना, एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते समय उनको कष्ट पहुंचाना कानूनी अपराध है। परन्तु आश्चर्य इस बात का है कि उनको जान से मार देने पर कोई दण्ड का प्रावधान नहीं है। बूचड़खाने पशु क्रूरता कानूनों का खुला उल्लंघन है। पशु मेलों से बूचड़खानों तक पशुओं को पहुंचाने के पूर्व अधिकारियों से वध करने योग्य पशु का प्रमाण-पत्र प्राप्त करने एवं पशुओं के वध करने की जो प्रक्रिया है, वह सब कानून की धज्जियां उड़ा रही है। मानो खेत ही बाड़ को खा रहा है। कानून बनाने एवं उसकी रक्षा हेतु जिम्मेदार सरकार खुले आम पशुक्रूरता कानून का गला घोंट रही है। कभी-कभी तो मांसाहार करने वाले या पशुओं पर दया न रखने वाले पशु कल्याण विभाग के उच्च पदाधिकारी बन जाये तो भी आश्चर्य नहीं। कानून की विसंगतियों एवं कार्य के अनुरूप योग्यता का मापदण्ड न होने से हमारे राष्ट्र में पशु कल्याण विभाग का कार्य सम्हालने वाले सर्वोच्च पदाधिकारी को मांस निर्यात को प्रोत्साहन देने वाले विभाग का दोहरा दायित्व दे दिया जाये तो भी आश्चर्य नहीं।**

पशु-पालन विभाग पशु-मारण की योजना बना रहे हैं। पश्चिम का अंधानुकरण कर आज खरगोश, मछली, अण्डों की खेती जैसी भ्रामक शब्दावली बनाकर जानवरों के प्रति करुणा, दया व प्रेम की भावना मिटाई जा रही है। आश्चर्य तो इस बात का है कि ये सारे कार्य कानून की आड़ में किये जा रहे हैं।

प्रकृति की उपेक्षा करने वाला कानून असंगत -

संविधान में भारत के नागरिकों को मनपसंद व्यवसाय करने का प्रावधान है। 23 अप्रैल, 1956 का दिन भारत के पशु जगत के लिए काला दिन था। इस दिन भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने मानव की करुणा, दया, संवेदना, अहिंसा, प्राणीमात्र के प्रति सभी महापुरुषों द्वारा मैत्री एवं प्रेम के उपदेश तथा जीओ और जीने दो के संदेश को अनेदेखा कर पशुवध को भी अपने मनपसन्द व्यापार के अंतर्गत स्वीकार कर लिया। परन्तु पशु-हत्या व्यापार और व्यवसाय नहीं हो सकता। यह मानवता पर कलंक है। पाशविकता का द्योतक है। **यदि पशु-हत्या मनपसंद व्यापार है तो फिर भविष्य में विदेशों से अ... रूप से विदेशी सामान लाना, जुआ-खोरी, वेश्यावृत्ति, चोरी, डकैती, आतंक जैसे अमानवीय कार्यों को भी मनपसन्द व्यापार की श्रेणी में बतलाया जावे तो भी आश्चर्य नहीं? संविधान की ऐसी विसंगतियों को सजग जनप्रतिनिधियों द्वारा दूर करवाना चाहिए और हत्या, क्रूरता, बर्बरता, निर्दयता, अत्याचार जैसे शब्दों की सरकार को स्पष्ट व्याख्या करनी चाहिए। जो प्राण हम दे नहीं सकते उन्हें लेने का किसी को अधिकार नहीं। सरकार संविधान की आड़ में मायाचार, अनैतिकता, हिंसा को प्रोत्साहन न दे। पद एवं पैसों के लिये असहाय मूक पशुओं की निर्मम हत्या को बढ़ावा अज्ञानता का प्रतीक है। जब किसी का आशीर्वाद हमारा मंगल कर सकता है तो मृत जानवरों की बद्दुआएं राष्ट्र के अमन चैन का सत्यानाश करने का हेतु बनें तो आश्चर्य नहीं। जानवर बेजुबान भले ही हों- बेजान नहीं है।**

हिंसा की उपेक्षा अनुचित -

हिंसा के लिए परिस्थितियां मुख्य नहीं, हमारी असजगता, निष्क्रियता, उदासीनता, तटस्थता मुख्य है जिसके कारण हमारा आचरण अपने कर्तव्यों को निभाते में कायरों जैसा हो गया है। कायर कभी अहिंसक नहीं हो सकता? अहिंसक और कायर में बहुत अंतर होता है। अहिंसक जहाँ सदैव निर्भय, तनाव-मुक्त, प्रसन्न रहता है एवं सजग रहता है, वहीं कायर सदैव भयभीत, तनावग्रस्त, असजग एवं दुःखी रहता है। अन्याय सहने वाले अन्याय करने वालों से ज्यादा गुनहगार होते हैं। अत्याचार का प्रतीकार करना हमारा कर्तव्य है। प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष पशुओं पर अत्याचार एवं हिंसा करने वाले एवं करवाने में सहयोग देने वालों का समर्थन करने वाले सभी हिंसा हेतु जिम्मेदार हैं।

अहिंसा में विश्वास रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है कि अपने समय, श्रम, साधनों एवं प्राप्त अधिकारों का अधिकाधिक

उपयोग हिंसा को रोकने में लगावें। मौत से लड़ा जा सकता है, भागा नहीं जा सकता। समस्याओं का समाधान किया जा सकता है उन्हें टाला नहीं जा सकता। कठिनाइयों का सामना किया जा सकता है, उनको रोका नहीं जा सकता। फिर महावीर, बुद्ध और महात्मा गांधी की इस पावन पुण्य-भूमि पर ऐसी कौनसी परिस्थितियाँ एवं कारण है कि हिंसा का विरोध करने वाले उसको रोकने में अपने आपको असहाय अनुभव कर रहे हैं। उनकी वाणी, चिंतन एवं प्रयास अपेक्षित परिणाम नहीं जा पा रहे हैं। आज हिंसा अहिंसा पर हावी हो रही है। करुणा, दया, क्रूरता, निर्दयता के सामने पराजित हो रही है। मानवीय गुणों पर दानवीय प्रवृत्तियां अधिकार जमा रही है। अंततः ऐसा न कभी हुआ है और न कभी हो सकता है। कहीं मूल में भूल तो नहीं हो रही है। जब तक अंगारे के ऊपर राख का आवरण है उसकी शक्ति का पता नहीं चलता। एक चिनगारी लाखों टन घास के ढेर को राख करने की क्षमता रखती है। जो समस्यायें हमें बहुत जटिल एवं डरावनी लगती है उनका समाधान मामूली एवं सरल होता है। आवश्यकता है अहिंसा में विश्वास रखने वाले सक्रिय, सजग, निःस्वार्थी चिंतनशील कार्यकर्ताओं, विद्वानों, लेखकों, चिंतकों, न्यायविदों, प्रशासनिक अधिकारियों, राजनेताओं एवं जन-प्रतिनिधियों को संगठित कर उनमें आत्मविश्वास जगाकर इस महत्वपूर्ण कार्य हेतु उनकी क्षमताओं का उपयोग लेने की। उनमें उदासीनता, तटस्थता, उपेक्षावृत्ति, असजगता को दूर कर कर्तव्यों का बोध कराया जाए। जब सिंह जागृत हो जाता है तो उसके साथ खिलवाड़ करने का किसी को साहस नहीं होता। हम भी अपना खोया हुआ सिंहत्व जगायें तो अन्याय, अत्याचार की दानवीय प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन देने वालों को निश्चित रूप से परास्त होना पड़ेगा।

विद्वत्परिषद् के त्रैवार्षिक चुनाव सम्पन्न

डॉ. जयकुमार जैन– अध्यक्ष एवं डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती' महामंत्री पुनः निर्वाचित

श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् रजि. के त्रैवार्षिक चुनाव दिनांक 24 जनवरी 2016 को श्री णमोकार महामंत्र धाम, श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र बही, जिला–मन्दसौर, म.प्र. में चुनाव अधिकारी श्री छोटेलाल जैन, एडव्होकेट, झाँसी के निर्देशन में सम्पन्न हुए, जिसमें सर्वसम्मति से डॉ. जयकुमार जैन, मुजफ्फरनगर को अध्यक्ष चुना गया। संविधान की धारा–10 इ के अनुरूप नवनिर्वाचित अध्यक्ष डॉ. जयकुमार जैन ने डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती', बुरहानपुर को महामंत्री मनोनीत किया। तदनन्तर शेष पदाधिकारियों का सर्वसम्मति से चयन इस प्रकार हुआ– उपाध्यक्ष–डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन, गाजियाबाद, कोषाध्यक्ष–डॉ. नेमिचन्द्र जैन, खुरई, संयुक्त मंत्री–डॉ. अनेकान्तकुमार जैन, नई दिल्ली, उपमंत्री–डॉ. ज्योति जैन, खतौली, प्रकाशन मंत्री–डॉ. पंकज जैन, भोपाल। कार्यकारिणी सदस्य–डॉ. रमेशचन्द जैन, श्रवणबेलगोला, डॉ. फूलचन्द जैन प्रेमी, वाराणसी, डॉ. शीतलचन्द जैन, जयपुर, डॉ. कमलेशकुमार जैन, वाराणसी, प्रा. अरुणकुमार जैन, सांगानेर, डॉ. विजयकुमार जैन, लखनऊ, पं. सुखदेव जैन; सागर, पं. अशोककुमार जैन शास्त्री, इन्दौर, पं. शैलेष जैन शास्त्री, मदनगंज–किशनगढ़, पं. सुरेन्द्रकुमार जैन, इन्दौर, पं. जयकुमार जैन, नारायणपुर, डॉ. आलोककुमार जैन, नई दिल्ली, श्रीमती प्रभा सिंघई, बड़ागांव–धसान, पं. आशीष जैन बम्हौरी, वाराणसी, विशेष आमंत्रित सदस्य–पं. पवनकुमार जैन दीवान, प्रतिष्ठाचार्य, मुरैना, पं. जयन्तकुमार जैन, सीकर, पं. पवनकुमार जैन, कोटा सर्वसम्मति से चुने गये।

अध्यक्ष पद हेतु डॉ. भागचन्द जैन 'भास्कर' एवं डॉ. जयकुमार जैन के नाम प्रस्तावित किये गये थे किन्तु डॉ. भागचन्द जैन 'भास्कर' ने अपना नाम वापिस ले लिया। अतः चुनाव अधिकारी श्री छोटेलाल जैन, एडव्होकेट ने डॉ. जयकुमार जैन को सर्वसम्मति से अध्यक्ष पद हेतु निर्वाचित घोषित किया। वे लगातार तीसरी बार अध्यक्ष तथा डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती' पाँचवीं बार लगातार महामंत्री मनोनीत किये गये हैं। यहाँ उल्लेखनीय है कि विगत 18 वर्षों से विद्वत्परिषद् में सर्वसम्मति से निर्वाचन की प्रशस्त परम्परा चली आ रही है जिस पर विद्वान् सदस्यों को गर्व है।

बही तीर्थ पर विराजमान प्राकृत ज्ञान केसरी आचार्यश्री सुनीलसागर जी महाराज के दर्शन समागत सभी विद्वानों ने किये और दिनांक 25 जनवरी 2016 को उनका दशवां आचार्य पदारोहण दिवस गुरुभक्ति पूर्वक धूमधाम से मनाया। सभी धार्मिक विधिविधान ब्रह्मचारी सुनील भैया, इन्दौर, पं. विजयकुमार जैन, मन्दसौर, पं. अशोक शास्त्री, इन्दौर एवं संघस्थ ब्र. भूमि दीदी ने सम्पन्न करवाये।

डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन
महामंत्री, श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद्

कुण्डलपुर :—कुण्डलपुर बडेबाबा की पावन भूमि श्री दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र कुण्डलपुर में परम पूज्य गणाचार्य श्री 108 आचार्य विराग सागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य 108 आचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज ससंघ का भव्य मंगल प्रवेश आज प्रातः 10:30 पर हुआ जिनकी मंगल आगवानी मंगल ध्वज पताकाओं , दिव्य घोष एवं विशाल जन संग्रह श्रद्धालुओं द्वारा की गई क्षेत्र कमेटी के सभी सदस्य गणों ने उपस्थित होकर मंगल आगवानी में अपनी भूमिका दर्ज की। आचार्यश्री श्री दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र द्रोणगिरी पंचकलयाणक के पश्चात् बडेबाबा के दर्शन करते हुए छिन्दवाड़ा नगर में पंचकल्याणक हेतु बिहार चल रहा है। सभी श्रद्धालु जन धर्म लाभ ले और पुण्यार्जन करें।

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पंचालेश्वर के अध्यक्ष श्री श्रीपाल गंगवाल, उपाध्यक्ष डॉ. सुगनचंद कासलीवाल, मंत्री श्री भाऊसाहेब बाकलीवाल, कोषाध्यक्ष श्री गौतमचंद काला, विश्वस्त श्री कैलाश खोबरे को क्षेत्र सम्बद्धता प्रमाणपत्र देते हुए महाराष्ट्र अंचल के अध्यक्ष श्री प्रमोद कासलीवाल, महामंत्री श्री देवेन्द्र कुमार काला, कोषाध्यक्ष श्री मनोज साहूजी, श्री फूलचंद जैन, श्री सुरेश कासलीवाल आदि दिखाई दे रहे हैं।

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र मांडळ के अध्यक्ष को सम्बद्धता प्रमाणपत्र देते हुए महाराष्ट्र अंचल के उपाध्यक्ष सर्वश्री ललित पाटणी, महामंत्री देवेन्द्र कुमार काला, कोषाध्यक्ष मनोज साहूजी, केतन ठोले, मंत्री विपिन कासलीवाल, विनोद लोहाड़े, अमीत कासलीवाल, उमेश चूड़ीवाल, डॉ. रमेश बड़जाते एवं दिलीप कासलीवाल।

आत्मज्ञान रूप पवित्र तीर्थ है (पद्मनन्दि-पंचविंशतिका, चंद्रोदय अ 28)

विदिशा-शीतलधाम में ट्रस्टियों का शपथग्रहण समारोह

श्री रमेशचंद्र जी जैन, विदिशा थुबौनजी क्षेत्र के अध्यक्ष चुने गये, मंच पर श्री राघवजी भूतपूर्व वित्तमंत्री, मध्यप्रदेश शासन, श्री मुकेश टंडन, नगरपालिका अध्यक्ष, श्री तोरणसिंहजी, जिला पंचायत अध्यक्ष, श्री श्यामसुंदरजी शर्मा, को-आप.बैंक के अध्यक्ष, श्री मुन्नालालजी जैन, समाजसेवी, श्री अतुल शाह, समाजसेवी, श्री संतोष जैन, अध्यक्ष-बीना बारहा, श्री बाबू हृदयमोहनजी, भूतपूर्व मंत्री-तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुंबई, श्री जीवनप्रकाश मड़वैया, भोपाल एवं शीतलनाथधाम के पदाधिकारीगण

विदिशा में शीतलधाम ट्रस्टीपद शपथग्रहण कार्यक्रम भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन द्वारा कराया गया। इसमें शीतलधाम के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री अशोकजी जैन एवं वर्तमान अध्यक्ष श्री रमेशजी जैन चंदेरी के अध्यक्ष श्री सुमतप्रकाशजी एवं मध्यांचल समिति के महामंत्री श्रीअरविंदजी(मक्कू), श्री थुबौनजी क्षेत्र के पूर्व अध्यक्ष श्रीविनोदजी मोदी एवं श्री राकेश कांसल तथा सभी पदाधिकारियों की प्रेरणा से थुबौनजी क्षेत्र में पचास तथा शीतलधाम में पचास से अधिक लोगों ने भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुंबई की आजीवन सदस्यता ग्रहण करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में श्रीमती नीलम जैन धर्मपत्नी राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन का सम्मान महिला मंडल द्वारा किया गया।

क्रोध रूपी अग्नि, पुण्य रूपी रत्नों को जला देती है।

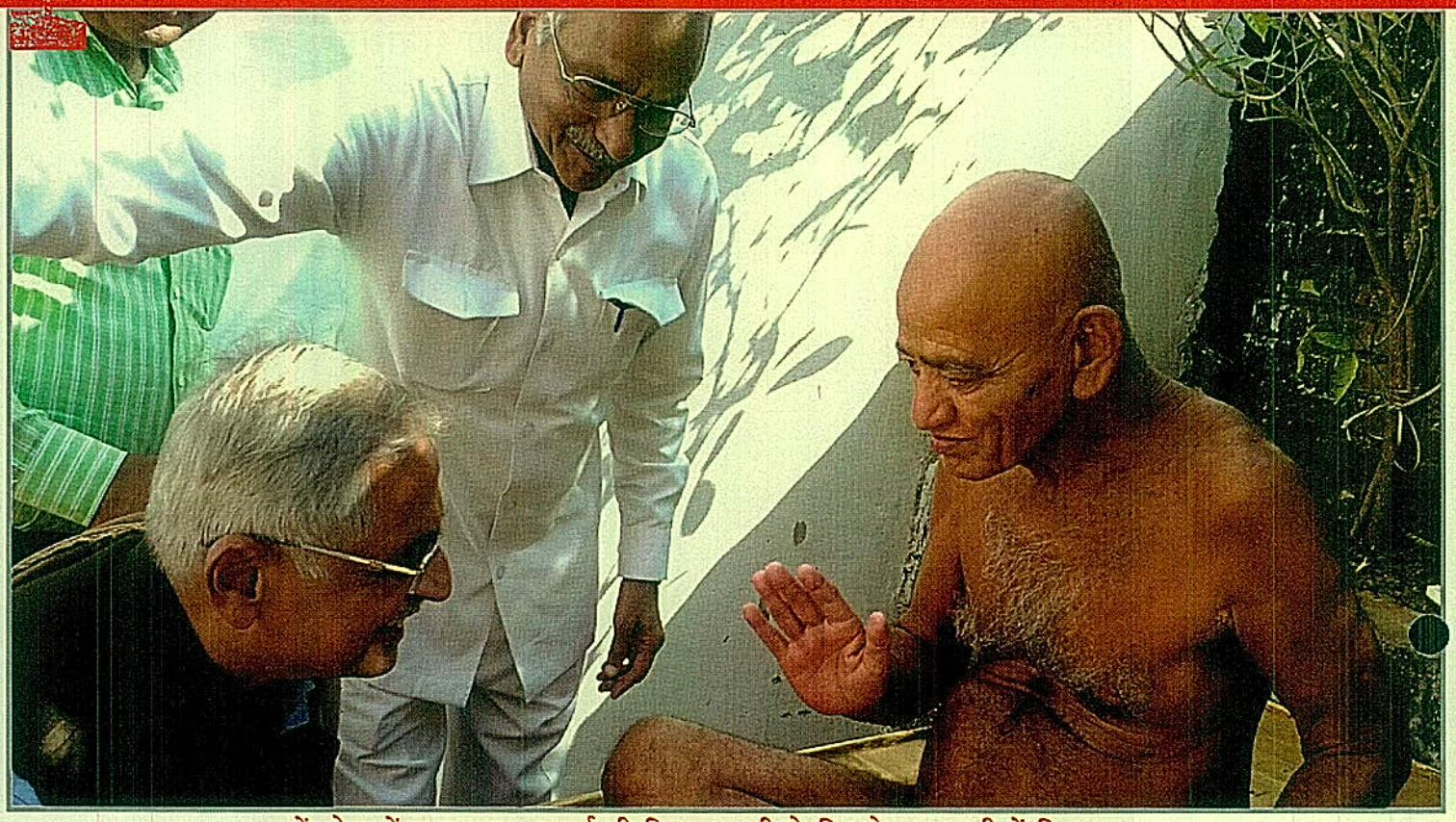

तेंदुखेड़ा में परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी से सिद्धक्षेत्र पावापुरी में विशाल, भव्य जिनालय के निर्माण हेतु श्री अजयकुमार जैन, आरा ने राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन के साथ आशिर्वाद प्राप्त करते हुए

दिल्ली की प्रमुख समाज सेवी संस्था तरुण मित्र परिषद द्वारा श्री सम्मेदशिखरजी सिद्धक्षेत्र में 25वां पोलियो करेक्टिव सर्जरी संपन्न

दिल्ली की प्रमुख समाज सेवी संस्था तरुण मित्र परिषद द्वारा अहिच्छत्र पारसनाथ, रामनगर-बरेली में कृत्रम अंग वितरित

जिसमें जिनदेव विराजमान हैं, वह तीर्थ है (उत्तरपुराण 54, 5)

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार में हम हृदय की गहराईयों से आप सभी का स्वागत करते हैं, अभिनंदन करते हैं।

सम्माननीय सदस्य

श्री प्रवीण श्रीकिशोर जैन
दिल्ली

अपराजिता जैन
दिल्ली

आजीवन सदस्य

श्री रविन्द्र डुंबरलाल बज,
वाशिम

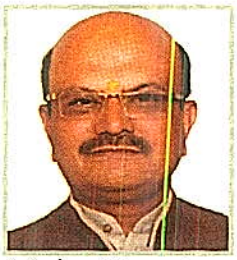

श्री किशोर शांतिलाल गंगवाल,
शिर्डी

श्रीमती राजकुमारी देवकुमार रंधेलिया,
कटनी

श्री बिमल प्रसाद सुपुत्र श्री एन.आर.जैन,
दिल्ली

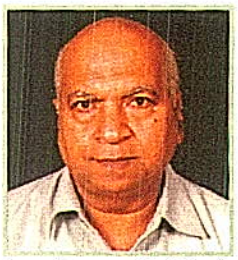

श्री जगदीशप्रसाद बिधीचंद जैन,
आगरा

श्री अभिषेक जगदीश प्रसाद जैन,
आगरा

श्रीमती रिचा अभिषेक जैन,
आगरा

कमलकुमार जैन,
गोटेगांव

विट्ठलभाई जैन,
गोटेगांव

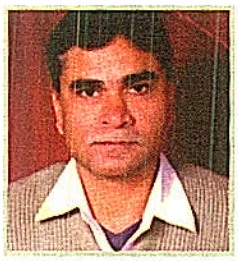

मनोज गुलाबचंद जैन,
भोपाल

संजीवकुमार जैन,
गोटेगांव

श्रीमती शांतिबाई नेमिचंद जैन,
भोपाल

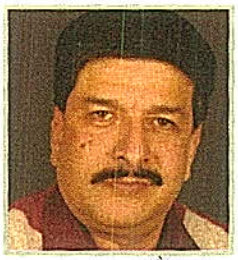

सलभकुमार जैन,
भोपाल

नीरज विनय जैन,
भोपाल

अशोक रतनचंद जैन,
गोटेगांव

ज्ञान एक ऐसा धन है, जो मन को भी अपने वश में कर लेता है।

आजीवन सदस्य

श्री राहुल कमलकुमार जैन,
भोपाल

श्री अमित प्रेमचंद जैन,
भोपाल

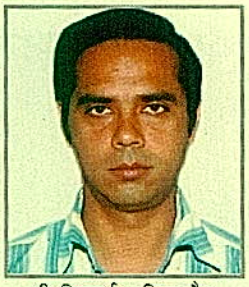
श्री सिद्धार्थ ललित जैन,
भोपाल

श्री राकेश शीलचंद जैन,
भोपाल

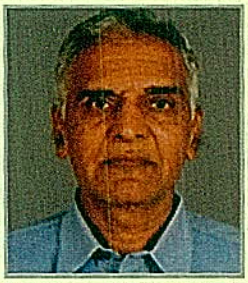
श्री अजितकुमार शिवलाल शहा,
पूना

श्री सुरेन्द्र मरथंडा मल्लनवार,
तमदड्डी-बागलकोट

श्री अजित जकप्पा देसाई,
तेरदाल-बागलकोट

श्री बाहुबली गंगप्पा बिलावडी,
तमदड्डी-बागलकोट

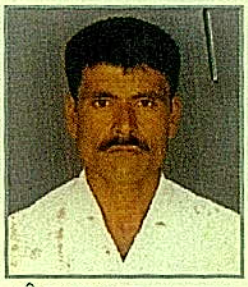
श्री सुभाष भूपल जक्कनवार,
तमदड्डी-बागलकोट

श्री चन्द्रमोहन हीरालाल शाह,
गुलबर्गा

श्रीमती शिल्पा चन्द्रमोहन शाह,
गुलबर्गा

श्री राजेन्द्र कुमार जैन,
छतरपुर

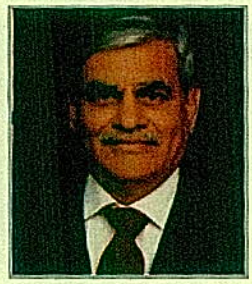
श्री राजीव सुरेन्द्र डोड्डनावर,
हिंदवाडी-बेलगाम

श्री रावसाहेब अन्नाराव जकानूर,
अथानी-बेलगाम

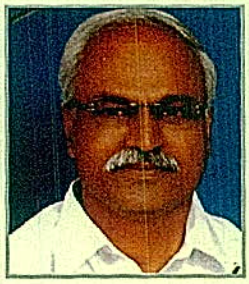
श्री अरुण सत्यप्पा यनगुडरी,
अथानी-बेलगाम

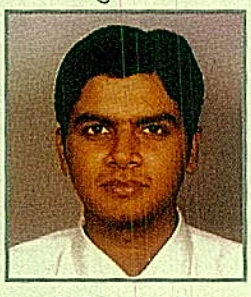
श्री गौरव नरेन्द्र जैन,
पूना

श्री मितेश महावीर ठोलिया,
जयपुर

श्री प्रदीप जैन,
कटनी

श्री वीरेन्द्र राजेशकुमार जैन,
आरोन

श्री नीरेश कुमार जैन,
कटनी

श्री प्रीतम राजकुमार शाह,
पूना

1. बहुत नहीं बहुत बार पढ़ने से ज्ञान का विकास होता है।
2. श्रद्धा से अंधकार में भी जो प्रतीत हो सकता है वह प्रकाश में संभव नहीं, प्रकाश में सुविधा मिल सकती है पर विश्वास नहीं।
3. स्वस्थ ज्ञान का नाम ध्यान है और अस्वस्थ ज्ञान का नाम विज्ञान।
4. धर्मात्मा को धर्म प्रिय होना चाहिये स्थान नहीं।

- आचार्य विद्यासागर

शाश्वत तीर्थाधिराज श्री सम्मेद शिखर जी

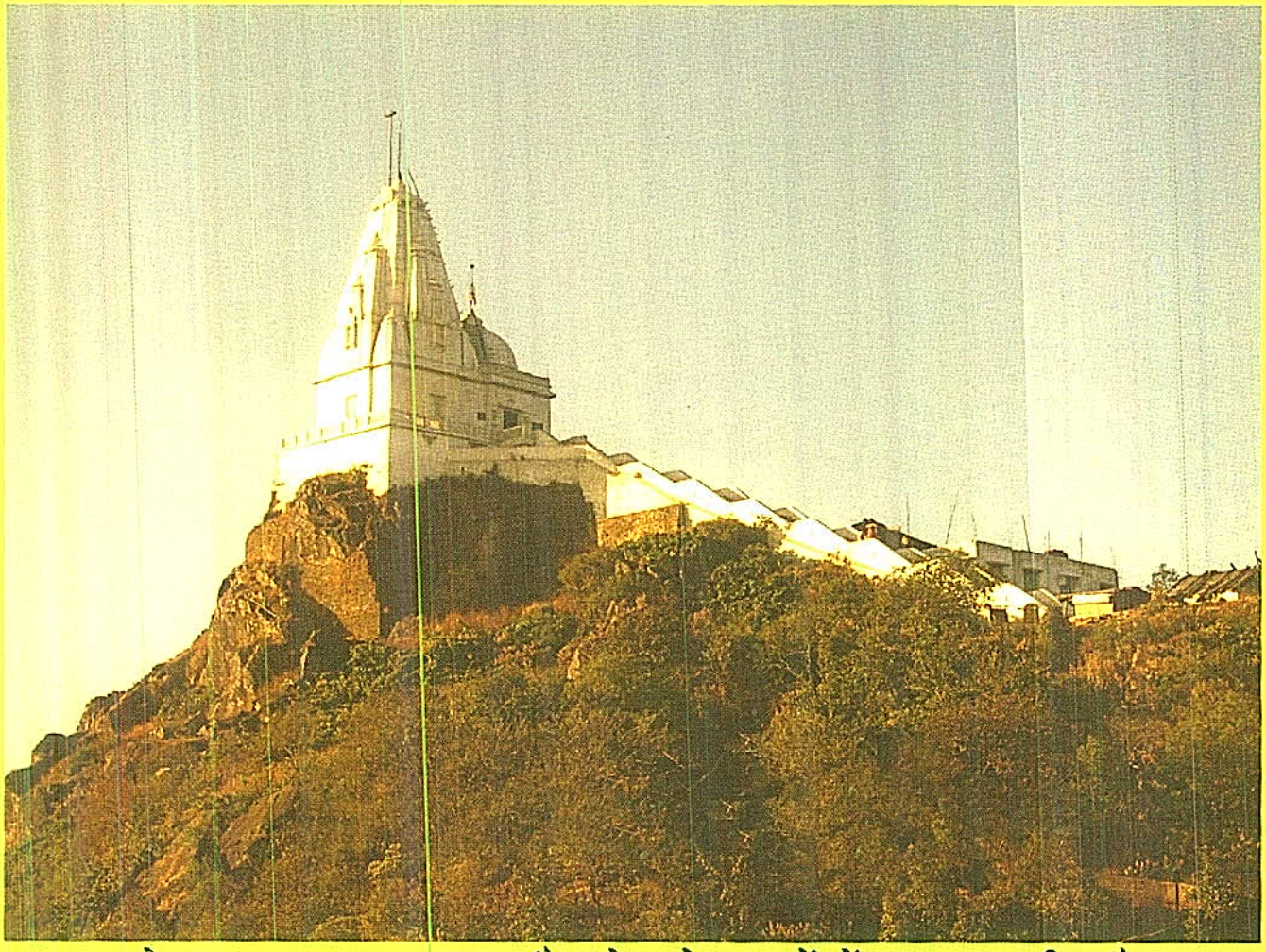

क्रोध पाप का बन्ध कराता है, जो अनेक भवों में दु:ख का बीज है।
इसलिए चित्त में क्षमा धारण करना चाहिए - **आचार्य विद्यानन्द जी म.**

ASHIANA GROUP
A Symbol of Quality

ASHIANA ISPAT LIMITED

(ISO 9001-2008 Certified Co.)

Mfr.: ASHIANA®, KAMDHENU, AL KAMDHENU™ GOLD TMT

Regd. Office: A-1116, RIICO Industrial Area, Phase-III, Bhiwadi,
Distt.- Alwar (Rajasthan), E-mail: ashianagroup@yahoo.co.in
Corp. Office: C-9/36, Sector -8, Rohini, Delhi-110085

दमदार सरिया | TMT Grade Fe 415,500,550